A Daily News Magazine
भोपाल
शनिवार, 23 अगस्त, 2025

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 343, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

विदेश नीति : क्या हम राष्ट्रीय गौरव व नई ताकत में संतुलन साध सकते हैं?

आशुतोष वार्ष्णेय

अगर अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप की टैरिफ (व्यापार शुल्क) की धमकियां सिर्फ बातचीत का हथकंडा नहीं हैं, तो भारत की विदेश नीति एक गहरी खाई में जा चुकी है। यह 1998 के बाद का सबसे बड़ा संकट है, जब भारत ने परमाणु परीक्षण किए थे और उसे अंतरराष्ट्रीय अलगाव का सामना करना पड़ा था। बड़ा फर्क यह है कि 1998 के परीक्षणों से भारत की शक्ति बढ़ी थी, जबकि इस समय भारत की ताकत काफी कमजोर दिख रही है। अगर भारतीय अर्थव्यवस्था पिछले दस सालों में औसतन 8-9 प्रतिशत सालाना की दर से बढ़ी होती, न कि 6-6.5 प्रतिशत की दर से, और भारत ने सैन्य आधुनिकीकरण में भारी निवेश किया होता, तो अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में देश की ताकत कहीं अधिक होती। अब दबाव में नीतिगत प्राथमिकताओं का बड़ा पुनर्गठन करना पड़ सकता है।

सभी बड़ी विदेश नीतियों को तीन हिस्सों में समझा जा सकता है - कोर (मुख्य), सेमी-पेरिफेरी (अर्ध-परिधि) और पेरिफेरी (परिधि)। यह विभाजन भौगोलिक नहीं है, बल्कि महत्व पर आधारित है। भारत की विदेश नीति का कोर कम से कम 2000 से अमेरिका, पाकिस्तान, चीन और रूस पर केंद्रित रहा है। सेमी-परिफेरी में यूरोप में ब्रिटेन, फ्रांस और जर्मनी के साथ संबंध आते हैं। मध्य पूर्व में इज़रायल, सऊदी अरब, यूएई और ईरान। पाकिस्तान और चीन से परे भारत का पड़ोस और कनाडा, ब्राज़ील, ऑस्ट्रेलिया, जापान और सिंगापुर, जगह की कमी की वजह से पेरिफेरी पर यहां बात नहीं की जा रही है।

अगर कोई बड़ा उलटफेर नहीं होता है, तो भारत की विदेश नीति का कोर लगभग टूटने की कगार पर है। पिछले ढाई दशकों में चार लक्ष्य आसानी से पहचाने जा सकते हैं। भारत ने अमेरिका के साथ नजदीकी बढ़ाई। वह पाकिस्तान के साथ बराबरी की स्थिति लौटने से बचना चाहता था। वह चीन के साथ बराबरी चाहता था। और वह रूस के साथ अच्छे संबंध रखना चाहता था।

रूस के साथ संबंध अभी भी मजबूत हैं, हालांकि उन पर खतरा मंडरा रहा है। ट्रंप की धमकियों के कारण भारत कुछ और स्रोतों जैसे सऊदी अरब से तेल लेने लगे, तो भी रूस से हथियारों और रक्षा सामग्री पर निर्भरता जल्दी खत्म नहीं होगी। बाकी तीन कोर हिस्से - अमेरिका, पाकिस्तान और चीन से जुड़े - लगभग पूरी तरह गिरावट की ओर हैं।

ट्रंप ने दो बड़े झटके दिए हैं। पहला, भारत के अमेरिकी निर्यात पर 50 प्रतिशत टैरिफ लगाने की धमकी देकर। इसमें सिर्फ इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे स्मार्टफोन और दवाइयों को बाहर रखा गया है। इसका मतलब है कि भारतीय वस्तुओं पर लगभग व्यापार प्रतिबंध लगा दिया गया है (सेवाओं पर नहीं)। अमेरिका भारत के कुल निर्यात का लगभग पांचवां हिस्सा लेता है। भारत को दूसरे बाज़ार खोजने में समय लगेगा। दूसरा झटका पाकिस्तान के रास्ते से आया है। कम से कम 1999 से, अगर उससे पहले नहीं, अमेरिका लगातार पाकिस्तान के साथ अपने रिश्तों को कम करता रहा था और भारत को ज्यादा महत्व देता रहा था। यह 'कोल्ड वॉर' के उस पैटर्न का उलट था, जिसमें पहले पाकिस्तान और बाद में भारत को प्राथमिकता दी जाती थी। राष्ट्रपति क्लिंटन, बुश, ओबामा, बाइडेन और यहां तक कि ट्रंप ने भी अपने पहले कार्यकाल में भारत से दोस्ती बढ़ाने की कोशिश की। वॉशिंगटन में भारत के नीति-निर्माताओं का स्वागत द्विदलीय सहमति से होता रहा, क्योंकि डेमोक्रेट्स और रिपब्लिकन दोनों ही भारत को अपनाते रहे।

हाल ही के भारत-पाकिस्तान सैन्य संघर्ष ने एक गुणात्मक बदलाव ला दिया है, जिसमें पुराने दौर की परछाइयां गहरी होती दिख रही हैं। इसका सबसे बड़ा प्रतीक ट्रंप का पाकिस्तान सेना प्रमुख फील्ड मार्शल असीम मुनीर को व्हाइट हाउस में दोपहर भोज के लिए आमंत्रण देना है। पाकिस्तान के साथ क्रिप्टोकरेंसी और संभावित तेल भंडार की खोज (जो बलूचिस्तान में रेयर अर्थ खनन का प्रतीक भी हो सकती है) पर समझौते भी हुए हैं। पाकिस्तान की ईरान में संभावित भूमिका भी विचाराधीन हो सकती है।

दूसरे शब्दों में, यह मोड़ रणनीतिक और आर्थिक तर्क से जुड़ा हो सकता है। लेकिन लगभग निश्चित है कि इसे भारत द्वारा पाकिस्तान के साथ सैन्य संघर्ष में युद्धविराम लाने में अमेरिका की भूमिका को न मानने से और तेज़ी मिली। भारत की कूटनीति ट्रंप की प्रसिद्ध श्रेय लेने की आदत का सही जवाब नहीं दे सकी। जब नीति बहुत व्यक्तिगत हो जाती है, तो अहंकार को शांत करने के लिए सही शब्द खोजना हमेशा एक कूटनीतिक चुनौती होता है। भारत के निर्णयकर्ता कोई ऐसा वाक्य नहीं गढ़ सके जो भारत की आत्मसम्मान की भावना और यथार्थवादी राजनीति (रियलपॉलिटिक) दोनों को एक साथ संतुष्ट कर सकें।

1990 में भारत और चीन की जीडीपी लगभग बराबर थी, लेकिन आज, प्रति वर्ष 9 प्रतिशत की तेज़ आर्थिक वृद्धि दर की वजह से चीन की अर्थव्यवस्था भारत से पांच गुना बड़ी हो गई है। चीन की सैन्य ताकत भी काफी अधिक है। चीन की सैन्य ताकत अमेरिका के और करीब पहुंच रही है।

इसके विपरीत, चीन के साथ आर्थिक और सैन्य बराबरी की भारत की तलाश अधूरी रह गई है। बराबरी के करीब पहुंचने के लिए भारत की अर्थव्यवस्था को पिछले 10-15 वर्षों में प्रति वर्ष 8-9 प्रतिशत की दर से बढ़ना चाहिए था, जैसा कि इस सदी के पहले दशक में हुआ था। साथ ही सैन्य आधुनिकीकरण में बड़े निवेश की ज़रूरत थी। इनमें से कोई भी वांछित स्तर तक नहीं हो पाया। इसी तरह, अमेरिका ने भारत को चीन के मुकाबले एक संतुलन के रूप में देखना शुरू किया था, खासकर 2012-13 के बाद जब चीन को अमेरिका का मुख्य प्रतिद्वंद्वी माना जाने लगा। यही तर्क वॉशिंगटन में भारत के पक्ष में द्विदलीय सहमति को चला रहा था, हालांकि अमेरिका में भारतवंशियों की बढ़ती क्षमता ने भी इसमें भूमिका निभाई।

अब नए हालात में भारत चीन के साथ कैसा व्यवहार करेगा? पहले अमेरिका चाहता था कि भारत चीन को संतुलित करे। क्या अगर हालात और बिगड़े तो भारत चीन का सहारा लेकर अमेरिका को संतुलित करने की कोशिश करेगा? इस अधिक नज़दीकी की कीमत क्या होगी, जबकि पाकिस्तान को चीन का समर्थन पुराना है। भारत को चीन के सामने बहुत बड़ी शक्ति असमानता के साथ जाना होगा।

भारत के नीति-निर्माताओं और रणनीतिक विचारकों को इस खाई से निकलने का रास्ता ढूंढना होगा। कुंजी यही है कि आत्मसम्मान के नियमों और शक्ति की वास्तविकताओं के बीच संतुलन बनाने की कोशिश की जाए। आत्मसम्मान के बिना कोई भी गर्वीला राष्ट्र नहीं जी सकता। और शक्ति की सच्चाई को अनदेखा करना बेहद ख़तरनाक हो सकता है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

मोदी ने किया था शिलान्यास, अब किया उद्घाटन

● बिहार के बेगूसराय में पीएम मोदी ने आम जनता के लिए खोला 6 लेन ब्रिज ● नीतिश कुमार के साथ पुल पर घूमे, गमछा लहराकर लोगों का किया अभिवादन

गयाजी (एजेंसी)। पीएम ने बेगूसराय में गंगा नदी पर बने 6 लेन औंटा-सिमरिया ब्रिज का उद्घाटन किया। नीतिश कुमार के साथ प्रधानमंत्री पुल पर घूमे। उन्होंने अपने गले से गमछा निकाला और हाथ से घुमाकर लोगों का अभिवादन किया। इस दौरान उनके साथ केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह और डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी भी मौजूद रहे। ब्रिज के नीचे बने घाट पर प्रधानमंत्री के स्वागत में सांस्कृतिक कार्यक्रम होते रहे। पीएम को देखने के लिए लोगों की भीड़ भी घाटों पर नजर आई। प्रधानमंत्री करीब 37 मिनट तक ब्रिज पर रुके। नया पुल न केवल भारी वाहनों के आवागमन को आसान बनाएगा बल्कि पूर्वोत्तर राज्यों को जोड़ने के लिहाज से महत्वपूर्ण होने वाला है। जिसका लाभ न केवल बेगूसराय समेत आस पास के क्षेत्र को होगा बल्कि ये पूरे बिहार और देश के लिए भी अहम होने वाला है। इस पुल के शुरू होने से जहां उद्योग और व्यापार को लाभ मिलेगा वहीं, पूर्वोत्तर हिस्सा भी मजबूत होगा। इस परियोजना की कुल लागत 1871 करोड़ रुपये है। गंगा नदी पर तैयार किए इस पुल की लंबाई 1.865 किलोमीटर है, जबकि पहुंच पथ सहित इसकी कुल लंबाई 8.150 किलोमीटर है। इसके निर्माण से उत्तर और दक्षिण बिहार की कनेक्टिविटी में ऐतिहासिक बदलाव आएगा। पीएम मोदी ने ट्वीट में लिखा, औंटा-सिमरिया पुल एक ऐतिहासिक परियोजना है, जो उत्तर और दक्षिण बिहार के बीच संपर्क में क्रांतिकारी बदलाव लाएगी!

पीएम बोले-जनता का सेवक बनकर खुशी होती है

पीएम मोदी ने कहा– मुझे जनता का सेवक बनकर उनके लिए काम करने में सबसे ज्यादा खुशी होती है। मेरा संकल्प है, जब तक हर किसी को पक्का घर नहीं मिल जाता, मोदी चैन से नहीं बैठेगा। इसी सोच में बीते 11 साल में 4 करोड़ से अधिक गरीबों को पक्के घर दिए गए। केवल बिहार में 38 लाख से अधिक घर बने। गयाजी में 2 लाख लोगों को घर मिला है। हमने सिर्फ चारदीवारी नहीं दी, बल्कि गरीब को उसका स्वाभिमान दिया है। इनमें बिजली–पानी, गैस कनेक्शन की सुविधाएं दी हैं।

इससे पहले गयाजी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 13000 करोड़ की योजनाओं की शुरुआत की। मगध यूनिवर्सिटी के कैंपस में अपने 34 मिनट के भाषण में उन्होंने कांग्रेस और आरजेडी पर निशाना साधा। सरकार की उपलब्धियां गिनवाईं। आतंकवाद और घुसपैठ पर भी बात की। पीएम ने कहा- हम घुसपैठियों को देश से निकालकर रहेंगे। इन्हें आपके हक पर डाका नहीं डालने देंगे। कांग्रेस-आरजेडी घुसपैठियों के साथ खड़े हैं। पहले जेल में बैठकर लोग फाइलों पर साइन करते थे। हम ऐसा बिल लेकर आए हैं, जिसके दायरे में पीएम भी है। गिरफ्तारी होते ही पद जाएगा। पहले बिहार में शाम को कहीं आना-जाना मुश्किल था। गयाजी जैसे शहर लालटेन राज में अंधेरे में डूबे रहते थे। न शिक्षा थी, न रोजगार था। बिहार की कितनी पीढ़ियों को इन लोगों ने पलायन के लिए मजबूर किया। पीएम ने कहा- जिसने पाप किया है, वो अपने पाप को दूसरों से छिपाता है, लेकिन खुद तो जानते हैं कि उन्होंने क्या किया है।

सुप्रभात

नज़्म गूंगी हो गई है
गीत चुप्पी साध बैठे
मौन हैं अश'आर सारे
कौन इनको पार तारे
मैं की जिसने दिल की खिड़की
खोल दी दुनिया की जानिब
और उसके रंग देखे ढंग देखे
फूल के बदले में आते संग देखे
और तब से दिल जो पत्थर हो गया है
प्यार मरुथल में नदी सा खो गया है
वो जो भोलापन था मेरी ज़िंदगी था
या कहूँ सादा सी मेरी बंदगी था
इक समझ की उसपे काई जम गई है
ज़िंदगी बहते से जैसे थम गई है
अब अधूरे गीत रह जाते हैं मेरे
शाम हैं होते नहीं जिनके सवेरे
नज़्म भी अपनी रवानी खो चुकी है
जैसे मेरी आँख पानी खो चुकी है।

– डॉ.पूनम यादव

केंद्रीय मंत्री गडकरी और मुख्यमंत्री डॉ. यादव जबलपुर को देंगे 1052 करोड़ रूपये लागत वाले फ्लाईओवर की सौगात

भोपाल (नप्र)। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 23 अगस्त, शनिवार को जबलपुर नगर को प्रदेश के सबसे बड़े और अत्याधुनिक फ्लाईओवर की सौगात देंगे। यह फ्लाईओवर जबलपुर शहर को नए यातायात स्वरूप में महानगरीय पहचान देगा।

जबलपुर में 1052 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित 6.855 किलोमीटर लंबा यह एलिवेटेड कॉरिडोर न केवल मध्यप्रदेश का सबसे बड़ा फ्लाईओवर है, बल्कि इसमें कई ऐसी विशेषताएं भी शामिल हैं जो इसे विशिष्ट पहचान देती हैं। इस फ्लाईओवर का सबसे बड़ा तकनीकी आकर्षण रेल मार्ग के ऊपर निर्मित 192 मीटर लंबा सिंगल स्पान केबल स्टे ब्रिज है। इस परियोजना में कुल 3 बो-स्ट्रिंग ब्रिज भी शामिल किए गए हैं। इनमें से दो पुल रानीताल क्षेत्र में और एक पुल बलदेवबाग क्षेत्र में बनाया गया है। उल्लेखनीय है कि ये सभी पुल पूरी तरह स्टील से निर्मित हैं और प्रत्येक की लंबाई लगभग 70 मीटर है। आधुनिक इंजीनियरिंग तकनीकों से निर्मित यह संरचना न केवल जबलपुर बल्कि पूरे देश के लिए एक अद्वितीय और प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत करती है। यातायात की दृष्टि से यह फ्लाईओवर क्रांतिकारी बदलाव लाएगा। जहां पहले मदनमहल से दमोह नाका तक पहुँचने में 40 से 45 मिनट का समय लगता था, अब फ्लाईओवर शुरू होने के बाद यह दूरी मात्र 6 से 8 मिनट में तय की जा सकेगी। इससे न केवल समय और ईंधन की बचत होगी, बल्कि शहर में प्रदूषण का स्तर भी घटेगा। व्यापारिक गतिविधियों को गति मिलेगी, नागरिकों की दैनिक जीवनशैली सरल होगी और जबलपुर एक नए यातायात मॉडल के रूप में देश के अन्य शहरों के लिए उदाहरण प्रस्तुत करेगा।

मध्यप्रदेश को बना रहे हैं देश का नया फूड बॉस्केट : मुख्यमंत्री

धार्मिक और आध्यात्मिक पर्यटन में हम तेजी से आगे बढ़ रहे हैं, हैल्थ टूरिज्म पर भी हमारा फोकस

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि बीते 20 सालों में मध्यप्रदेश का परिदृश्य बड़ी तेजी से बदला है। हम मध्यप्रदेश को देश का 'मॉडल स्टेट' बनाने के लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं। हमारी सरकार मध्यप्रदेश को देश का 'न्यू फूड बॉस्केट' बनाने के लिए तेजी से प्रयत्नशील हैं। हमारे अन्नदाता किसानों की मेहनत से प्रदेश के अनाज भंडार अन्न से भरे पड़े हैं। मध्यप्रदेश वह प्रदेश है, जहां तेजी से जिलों में मैडिकल कॉलेज खुल रहे हैं। हमारी सरकार पीपीपी मॉडल पर मैडिकल कॉलेज खोलने के लिए निवेशकों को मात्र एक रूपए में 25 एकड़ जमीन और 10 साल के लिए अपना जिला-संभागीय अस्पताल भी देने को तैयार है। निवेशक मेडिकल कॉलेज के लिए जब अपना खुद का अस्पताल तैयार कर लेंगे, तब 10 साल बाद हम अपना जिला चिकित्सालय उनसे वापस ले लेंगे। यह निवेशकों को सरकार की ओर से दोहरी मदद है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शुक्रवार को नई दिल्ली में एक निजी मीडिया समूह द्वारा आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देश में राष्ट्रीय नदी जोड़ो परियोजना का शुभारंभ मध्यप्रदेश से हुआ। करीब एक लाख करोड़ रूपए की केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना से बुंदेलखंड के सारे जिले और लगभग 70 हजार करोड़ रूपए लागत की पार्वती-कालीसिंध-चंबल नदी जोड़ो परियोजना से मालवा और चंबल के सभी जिलों में सिंचाई और पेयजल की स्थाई सुविधा उपलब्ध कराएंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में धार्मिक और आध्यात्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए हम आगे बढ़ रहे हैं। सिंहस्थ-2028 की तैयारी पूरे जोर-शोर से जारी है। श्रीमहाकाल लोक बनने के बाद उज्जैन की तस्वीर ही बदल गई है। उज्जैन शहर की आबादी फिलहाल 7 लाख है, पर अब देश-विदेश से हर साल 7 करोड़ से भी अधिक श्रद्धालु श्रीमहाकाल बाबा और श्रीमहाकाल लोक के दर्शन के लिए उज्जैन आ रहे हैं। उन्होंने बताया कि श्री महाकाल लोक बनने के बाद उज्जैन शहर में ही 200 से अधिक होटल खुल गये हैं, इससे शहर और प्रदेश की अर्थव्यवस्था को भी गति मिली है। उज्जैन में मेडिकल डिवाइस पार्क के लिए एक हजार एकड़ जमीन भी पूरी उपयोग में आ गई, इसलिए अब हम एक हजार एकड़ जमीन का लैण्ड बैंक पुन: आरक्षित कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि एयर कनेक्टिविटी पर हमारा पूरा फोकस है। हम मध्यप्रदेश में नई एविएशन पॉलिसी लेकर आए हैं। इस पॉलिसी के अंतर्गत हमारे खुद के प्लेन प्रदेश में शुरू करने के लिए इंसेंटिव भी दिए जा रहे हैं।

जहां से उठाया, आवारा कुत्तों को वहीं ले जाकर छोड़ो

● आवारा कुत्तों के मामले पर सुप्रीम कोर्ट का बड़ा फैसला ● कहा-शेल्टर होम में केवल हिंसक और बीमार कुत्ते रहेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। आवारा कुत्तों के मामले पर शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट ने अपना फैसला सुना दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने आदेश देते हुए कहा कि शेल्टर होम से सभी कुत्तों को छोड़ा जाए। कोर्ट ने आदेश देते हुए कहा कि हिंसक और बीमार कुत्ते शेल्टर होम में ही रहेंगे। कोर्ट ने इस संबंध में ना केवल दिल्ली बल्कि अन्य राज्यों को भी नोटिस जारी किया है। कोर्ट ने आदेश देते हुए कहा कि नसबंदी के बाद कुत्तों को छोड़ना होगा। किसी भी सार्वजनिक स्थान पर कोई कुत्ते को खाना नहीं खिला सकता है।

वहीं, शीर्ष न्यायालय ने इस संबंध में कानून बनाने की भी वकालत की है। आज के फैसले के साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने 11 अगस्त के उस फैसले पर रोक लगा दी है, जिसमें दिल्ली एनसीआर के सभी आवारा कुत्तों को शेल्टर होम में भेजने को कहा गया था। अपने फैसले में कोर्ट ने स्पष्ट किया कि कुत्तों को शेल्टर होम में नहीं रखा जाएगा, नसबंदी के बाद छोड़ दिया जाएगा।

सार्वजनिक स्थान पर नहीं खिला सकेंगे खाना

शीर्ष न्यायालय ने हर कम्युनिसिपल ब्लॉक में आवारा कुत्तों को खिलाने के लिए अलग से जगह बनाने की बात कही। कोर्ट ने निर्देश देते हुए कहा कि केवल निर्धारित जगह पर ही कुत्तों को खाना दिया जाए। किसी भी सार्वजनिक स्थान पर कुत्तों को खाना नहीं खिलाया जाएगा। अगर ऐसा करते हुए कोई पाया जाता है, तो उसके विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी। कोर्ट ने स्पष्ट कहा कि कुत्तों को जहां से उठाया गया है, उन्हें उसी स्थान पर रिलोकेट किया जाएगा।

यूपी के मुरादाबाद में 'बैंड बाजा बारात' पर संकट

● देवी-देवताओं के नाम पर फंसे मुस्लिम संचालक!

मुरादाबाद (एजेंसी)। यूपी का मुरादाबाद जिला अक्सर विवादों के साये में रहता है। यहां एक और नया विवाद पैदा हो गया है। दरअसल शहर के एक वकील साहब ने सीएम पोर्टल पर ऐसी शिकायत कर दी कि पुलिस पसोपेश में पड़ गई। वकील शेबी शर्मा का आरोप है कि मुस्लिम बैंड संचालक पहचान छिपाकर हिंदू देवी-देवताओं के नाम से बैंड पार्टी चला रहे हैं। पुलिस ने दोनों पक्षों को बुलाकर बातचीत की है। बताया जा रहा है कि पुलिसवालों ने मुस्लिम बैंड वालों से हिंदू देवी-देवताओं के नाम हटाने के लिए कहा है। इस पर बैंडवालों ने समय मांगा है। हालांकि, पुलिस ने कोई आदेश नहीं जारी किया है। यह पूरा विवाद इतना बढ़ा कि एसपी सिटी कुमार रणविजय सिंह तक पहुंच गया। बैंडबाजा वालों का कहना है कि हम लोग सालों से इसी नाम से बैंड चला रहे हैं। उनका जो नाम चला आ रहा है उसे कैसे बदल सकते हैं। मुरादाबाद शहर में 500 से ज़्यादा बड़े और छोटे बैंड संचालित होते हैं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 23 अगस्त 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

मंदसौर और नरसिंहपुर के एसपी बदले

एमपी में 9 आईपीएस अफसरों के तबादले; अभिषेक रंजन को उज्जैन का एएसपी बनाया

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश शासन ने गुरुवार रात मंदसौर और नरसिंहपुर के एसपी बदल दिए। विनोद कुमार को मंदसौर का नया एसपी बनाया गया है। वहीं ऋषिकेश मीना नरसिंहपुर के नए एसपी होंगे। उज्जैन में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक के पद पर अभिषेक रंजन की पोस्टिंग की गई है। अभिषेक अभी सिंगरौली में एएसपी के पद पर पदस्थ हैं।

मृगाखी को एआईजी पीएचक्यू बनाया- गृह विभाग द्वारा जारी आदेश में पुलिस उपायुक्त जोन 4 नगरीय पुलिस भोपाल जितेंद्र सिंह पवार को पुलिस उपायुक्त यातायात नगरीय पुलिस जिला भोपाल बनाया गया है। वहीं नरसिंहपुर की एसपी मृगाखी डेका एआईजी, पीएचक्यू में तैनात किया गया है। मंदसौर के एसपी अभिषेक आनंद को सेनानी प्रथम वाहिनी एसएएफ इंदौर बनाया गया है। ऋषिकेश मीना पुलिस उपायुक्त जोन 4 नगरीय पुलिस इंदौर को एसपी नरसिंहपुर पदस्थ किया गया है।

विनोद कुमार मंदसौर के नए एसपी होंगे- इसी तरह विनोद कुमार मीना पुलिस उपायुक्त जोन वन इंदौर को एसपी मंदसौर बनाया गया है। एएसपी उज्जैन मयूर खंडेलवाल को पुलिस उपायुक्त जोन 4 नगरीय पुलिस भोपाल की जिम्मेदारी सौंपी गई है। आनंद कलगी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक जबलपुर को पुलिस उपायुक्त जोन 4 नगरीय पुलिस इंदौर बनाया गया है। कृष्ण लाल चंदानी एएसपी ग्वालियर को पुलिस उपायुक्त जोन वन नगरीय पुलिस इंदौर बनाया गया है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने नई दिल्ली में केंद्रीय तेल एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप पुरी से उनके निवास पर सौजन्य भेंट की।

रेल भवन की तरफ से दीवार फांदा, गरुड़ द्वार तक पहुंचा

- संसद भवन की सुरक्षा में फिर हुई चूक, दबोचा गया शख्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद भवन की सुरक्षा में फिर एक बार चूक का मामला सामने आया है। शुक्रवार सुबह एक व्यक्ति ने राज्यसभा भवन में अनधिकृत तरीके से घुसने की कोशिश की, जिसके बाद उसे सुरक्षाकर्मियों ने पकड़ लिया। यह घटना सुबह 6 बजे की है। सूत्रों से मिल रही जानकारी के मुताबिक, रेल भवन की तरफ से दीवार कूद कर नई संसद भवन के गरुड़ द्वार तक पहुंच गया था। वहीं, राज्यसभा के एक अधिकारी ने इस घटना की पुष्टि करते हुए कहा,एक व्यक्ति ने इमारत में घुसने का प्रयास किया।

कोलकाता में मोदी ने मेट्रो की नई लाइनों का किया शुभारंभ

- पीएम के कार्यक्रम में नहीं आईं मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, बनाई दूरी
- पीएम मोदी ने कहा-केंद्र से भेजा पैसा बंगाल सरकार लूट लेती है

कोलकाता (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम बंगाल के दौरे में कोलकाता पहुंचने पर एक बड़े इंतजार को खत्म कर दिया। उन्होंने कोलकाता मेट्रो की तीन नई लाइनों का शुभारंभ किया। पीएम मोदी ने कोलकाता मेट्रो में सफर भी किया। पीएम मोदी ने कहा कि इस दौरान उन्हें काफी लोगों से बातचीत करने का मौका मिला। पीएम मोदी के कार्यक्रम में राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी मौजूद नहीं रहीं। राज्य के राज्यपाल सीवी आनंद बोस कार्यक्रम में उपस्थित रहे। रेल मंत्री की तरफ से पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री को कोलकाता मेट्रो रेल प्रोजेक्ट्स के शुभारंभ कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया था। कोलकाता मेट्रो के प्रोजेक्ट्स का शुभारंभ करने के बाद पीएम मोदी ने कहा कि कोलकाता जैसे शहरों का भारत की समृद्धि में बड़ी भूमिका है। पीएम मोदी ने कहा कि आज का कार्यक्रम इस बात का प्रतीक है कि भारत के शहरों में कैसे ट्रांसपोर्ट आधुनिक हो रहा है। शहर तरक्की कर हैं। पीएम मोदी ने दमदम का भी नाम लिया।

सुप्रीम आदेश, बिहार एसआईआर में 'आधार' करें मान्य

- कहा-हटाए गए वोटर ऑनलाइन आवेदन भी कर सकेंगे
- राजनीतिक पार्टियों से एससी ने कहा, लोगों की मदद करें

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट में बिहार में चल रही स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन यानी एसआईआर (सामान्य शब्दों में वोटर लिस्ट वेरिफिकेशन) पर शुक्रवार को सुनवाई हुई। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को निर्देश दिया कि वह हटाए गए वोटर्स को लिस्ट में अपना नाम जुड़वाने के लिए फिजिकली के अलावा ऑनलाइन आवेदन की अनुमति भी दे। सुप्रीम कोर्ट ने ये भी कहा कि आधार कार्ड समेत फॉर्म 6 में दिए गए 11 दस्तावेज में से कोई भी जमा किया जा सकता है, इनमें ड्राइविंग लाइसेंस, पासबुक, पानी का बिल जैसे डॉक्यूमेंट शामिल हैं। कोर्ट ने राजनीतिक पार्टियों को मामले पर चुप्पी साधने के लिए भी फटकार लगाई और पूछा कि मतदाताओं की मदद के लिए आप क्या कर रहे हैं। आपको आगे आना चाहिए। अगली सुनवाई 8 सितंबर को होगी। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने चुनाव आयोग से कई सवाल पूछे। जस्टिस सूर्यकांत ने कहा- राजनीतिक दलों की निष्क्रियता हैरान करने वाली है। राज्य की 12 पॉलिटिकल पार्टियों में से यहां मात्र 3 पार्टियां ही कोर्ट में आई हैं। वोटर्स की मदद के लिए आप क्या कर रहे हैं।

आपकी ओर से केवल दो आपत्तियां ही आई हैं। कोर्ट ने इस बात पर भी हैरानी जताई कि राजनीतिक दलों के लगभग 1.6 लाख बूथ लेवल एजेंट होने के बावजूद, उनकी ओर से केवल दो आपत्तियां ही आई हैं।

फाइनल लिस्ट 30 सितंबर को आएगी- पिछली सुनवाई के दौरान, सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि अगर स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन में कोई गैरकानूनी काम पाया गया तो वह इसके नतीजों को रद्द कर सकता है। सांसद मनोज झा के वकील कपिल सिब्बल ने कहा कि 65 लाख मतदाताओं को हटाना गैरकानूनी है। प्रशांत भूषण ने ईसीआई पर मतदाता सूची को गैर-खोज योग्य बनाने का आरोप लगाया। कोर्ट ने दस्तावेजों की कमी के दावों का विरोध करते हुए कहा कि हर किसी के पास कोई न कोई सर्टिफिकेट होता है। अभी सुनवाई जारी रहेगी।

दिल्ली सीएम पर हमले के बाद हटाए गए पुलिस कमिश्नर

- एएपी का आरोप, पुलिस सीसीटीवी फुटेज छिपा रही

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता पर उनके आवास पर एक जनसभा के दौरान हमले के एक दिन बाद, गुरुवार को दिल्ली पुलिस कमिश्नर एसबीके सिंह को तत्काल प्रभाव से हटा दिया गया है। उनकी जगह 1992 बैच के आईपीएस अफसर सतीश गोलचा को नियुक्त किया गया है। गोलचा 2020 में दिल्ली दंगों के दौरान स्पेशल पुलिस कमिश्नर थे और पिछले साल अप्रैल में उन्हें डायरेक्टर जनरल (जेल) नियुक्त किया गया था। दिल्ली पुलिस ने राजेश भाई खिमजी के एक दोस्त को राजकोट से हिरासत में लिया है।

हालांकि, अभी स्पष्ट नहीं है कि वह सीएम पर हमले से जुड़े मामले में शामिल था या नहीं। पुलिस उन 10 लोगों पर नजर रख रही है जो कॉल और चैट के जरिए आरोपी के संपर्क में थे। पुलिस की एक टीम राजकोट में उन 5 और लोगों के बयान दर्ज करेगी जिनका डेटा आरोपी के मोबाइल से लिया गया है।

गुजरात में अब 8वीं के छात्र ने क्लासमेट को चाकू मारा

- खेलकूद में झगड़ा हुआ था, 3 दिन पहले 10वीं के स्टूडेंट की हत्या हुई थी

महीसागर (एजेंसी)। गुजरात में अहमदाबाद के बाद अब महिसागर जिले में 8वीं के स्टूडेंट पर चाकू से हमला करने की घटना सामने आई है। घटना बालासिनोर कस्बे के सरकारी स्कूल की है। गुरुवार की शाम स्टूडेंट्स छुट्टी के बाद स्कूल से निकल रहे थे। इसी दौरान क्लासमेट ने साथी छात्र पर चाकू से हमला कर दिया। चाकू के हमले में स्टूडेंट के कंधे, कमर और पेट में जख्म हो गए हैं। हालांकि, अस्पताल में भर्ती स्टूडेंट खतरे से बाहर है। पुलिस ने आरोपी स्टूडेंट के खिलाफ बीएनएस की धारा 115 (1), 118 (1) (2), 352 के तहत शिकायत दर्ज की है। खेलकूद के दौरान हुआ था विवाद पूछताछ में क्लास के अन्य स्टूडेंट्स ने बताया कि घटना के एक दिन पहले (20 अगस्त) को दोनों के बीच खेलकूद को लेकर विवाद हुआ था। इसी रंजिश में आरोपी ने इस वारदात को अंजाम दिया। बच्चों ने बताया कि आरोपी स्टूडेंट बैग में चाकू रखकर लाया था। कुछ बच्चों ने उसे बैग से चाकू निकालते हुए भी देखा था। अहमदाबाद में 10वीं के छात्र की हत्या इससे पहले बीते 19 अगस्त को 10वीं के एक छात्र ने क्लासमेट की पेपर कटर मारकर हत्या कर दी थी। इन स्टूडेंट्स के बीच भी कुछ दिनों पहले मामूली सी बात पर कहासुनी हो गई थी। इसी रंजिश का बदला लेने के लिए आरोपी छात्र ने मंगलवार को स्कूल की छुट्टी होते ही छात्र नयन सिंधी पर बॉक्स कटर से हमला कर दिया।

मैं बीजेपी से आता हूं और संघ का स्वयंसेवक हूं

- केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने लेफ्ट के गढ़ में किया साफ
- बताया-वह किस तरह के भारत का सपना देखते हैं

तिरुवनंतपुरम/कोच्चि (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 के जश्न को लेकर जहां महाराष्ट्र के नागपुर मुख्यालय में तैयारियां शुरू हो गई हैं। बीजेपी ने उपराष्ट्रपति पद के लिए संघ से आने वाले सीपी राधाकृष्णन को उम्मीदवार बनाया है। इसके बीच शुक्रवार को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कोच्चि में खुद को स्वयंसेवक बताया। शाह ने एक कार्यक्रम में केरल की एलडीएफ सरकार को निशाने पर लिया। उन्होंने कहा कि वह अपने कैडर के लिए फंड खर्च कर रही है। इस मौके पर गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि मैं भाजपा से आता हूं, संघ का स्वयंसेवक हूं। जब तक भारत महान नहीं बन जाता, तब तक हमें आराम करने का अधिकार नहीं है। गृह मंत्री अमित शाह ने इस मौके पर आगे कहा कि किसी को आराम करने का अधिकार नहीं है, आप सब को भी नहीं। शाह ने कहा कि उन्होंने ऐसे भारत के निर्माण की कल्पना की है, जिसका पूरा विश्व सम्मान करता हो और जो सबसे समृद्ध हो। गौरतलब हो कि पीएम मोदी 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प लिया है। केंद्रीय गृह मंत्री का यह बयान ऐसे वक्त पर आया है जब शुक्रवार की सुबह की आरएसएस ने अपने शताब्दी वर्ष कार्यक्रम के लिए पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को चीफ गेस्ट बनाया है। दलित वर्ग से आने वाले कोविंद को मुख्य अतिथि बनाकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने बड़ा संदेश दिया है। यह कार्यक्रम विजयादशमी के मौके पर संघ के मुख्यालय नागपुर में होगा। अमित शाह ने मनोरमा न्यूज के कॉन्क्लेव को संबोधित करते हुए कहा कि केरल के लोग यह महसूम कर रहे हैं कि उनके लिए काम करने वाली सरकार होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि जब भी कभी देश के विकास का इतिहास लिखा जाएगा तो पीएम नरेंद्र मोदी के 11 सालों का जिक्र होगा। उन्होंने केरल वहीं खड़ा है, जबकि उसके पास काफी सारी संभावनाएं हैं।

शाह ने कहा कि कम्युनिस्ट आइडियोलॉजी से जो उदासीन माहौल बनता है। वह केरल को रोक रहा है। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में केरल जरूर बदलाव और विकास के लिए वोट करेगा। ऐसा मुझे विश्वास है।

सवाई माधोपुर में बाढ़! 'पानी-पानी' हुआ शहर

रेलवे स्टेशन, ट्रेन और कई कॉलोनियां डूबीं

सवाई माधोपुर (एजेंसी)। मौसम विभाग के अलर्ट के अनुरूप सवाई माधोपुर जिले में बीती रात से लेकर आज सुबह तक मूसलाधार बारिश ने तबाही मचा दी। राहत की उम्मीद में शुरू हुई यह बारिश लोगों के लिए आफत बन गई। जिले के नदी-नाले उफान पर हैं, दर्जनों गांव जलमग्न हो गए हैं, और सैकड़ों घरों में पानी भर गया है। एनएच-552 पर उघाड़ की पुलिया टूटने से खंडार उपखंड का जिला मुख्यालय से संपर्क कट गया है। जिला प्रशासन अलर्ट मोड पर है और राहत कार्यों में जुटा हुआ है। मौसम विभाग की चेतावनी के बाद बीती रात से शुरू हुआ बारिश का सिलसिला सुबह तक जारी रहा।

शिवपुरी में स्कूल वैन पुलिया से नीचे गिरी

- 14 बच्चे और एक शिक्षिका घायल; स्कूल संचालक स्टूडेंट्स को बैठाकर ड्राइव करना सीख रहा था

शिवपुरी (नप्र)। शिवपुरी के बैराड़ थाना क्षेत्र के पोहरी-बैराड़ रोड पर शुक्रवार सुबह एक सड़क हादसा हुआ। जानकारी के अनुसार, प्रथा विद्यापीठ स्कूल बैराड़ की टाटा सूमो वैन ,जिसमें करीब 16 बच्चे सवार थे, पुलिया से नीचे जा गिरी। हादसा सुबह लगभग 8 बजे हुआ। वैन में एलकेजी से लेकर 7वीं कक्षा तक के बच्चे सवार थे।

हादसे में एक शिक्षिका और 14 से अधिक बच्चे घायल हुए। ग्रामीणों की मदद से सभी को बैराड़ अस्पताल पहुंचाया गया। प्राथमिक उपचार के बाद सभी घायल बच्चों और शिक्षिका को जिला अस्पताल शिवपुरी रेफर किया गया और बाद में मेडिकल कॉलेज शिवपुरी में भर्ती कराया गया।

स्कूल संचालक खुद ड्राइव कर रहा था- जानकारी के अनुसार, हादसे के समय वैन का मूल ड्राइवर मौजूद था, लेकिन स्कूल संचालक दीवान जाटव ने स्वयं वाहन चला लिया। बताया गया कि दीवान की बाइक पंक्चर हो गई थी, जिसके बाद उसने ड्राइवर को हटाकर वैन ड्राइविंग संभाल ली। संचालक के शौकिया ड्राइविंग के कारण मासूम बच्चों की जान खतरे में पड़ गई।

हादसे में घायल ये बच्चे घायल हुए- रिया पिता विनोद धाकड़ (6), कृष्णा पिता दयाराम जाटव (14), विनायक पिता वीरेन्द्र धाकड़ (6), दिव्यांश पिता मनीष धाकड़ (11), कार्तिक पिता मनीष धाकड़ (9), शेंकी जाटव पिता सिरनाम जाटव (12), श्रृष्टि जाटव पिता दीवान जाटव (8), राज जाटव पिता दीवान जाटव (6), हेमंत जाटव पिता दारा सिंह (12), सौम्या जाटव पिता धर्मेंद्र जाटव (7), योगेंद्र जाटव पिता दयाराम (12), मोहनी पिता विनोद (11), आयुष्मान पिता विनोद (5)।

वहीं, शिक्षिका सिंकी ओझा पिता रामस्वरूप (19) भी घायल हुई हैं। इसके अलावा वैन में स्कूल संचालक का भाई ब्रजेश जाटव और एक ड्राइवर भी सवार था।

स्कूल संचालक के खिलाफ केस दर्ज- हादसे में घायल कार्तिक जाटव की हालत गंभीर होने पर उसे ग्वालियर रेफर किया गया। पोहरी विधायक कैलाश कुशवाह ने घटना की जानकारी लेने के लिए मेडिकल कॉलेज पहुंचकर बच्चों का हाल जाना।

बैराड़ थाना प्रभारी रवि शंकर कौशल ने बताया कि पुलिस ने स्कूल संचालक दीवान जाटव के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

भोपाल में लगेगा पहला केमिकल फ्री प्रोडक्ट्स मेला

महिलाओं द्वारा उगाए गए रसायन मुक्त फल, सब्जियां, जंगली शहद, दालें और मिलेट्स फूड मिलेंगे

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल में पहली बार आजीविका फ्रेश मेले का आयोजन हो रहा है। 23 और 24 अगस्त को यह मेला शौर्य स्मारक के सामने भोपाल हाट में लगाया जाएगा। इस मेले में प्रदेश भर के स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं द्वारा बनाए गए प्रोडक्ट्स बिक्री के लिए उपलब्ध रहेंगे। यह प्रदेश का पहला मेला है, जिसमें केमिकल रहित साग-सब्जियां भी बेची जाएंगी।

सुबह 11 बजे से रात 9.30 बजे तक चलेगा- मेले का उद्घाटन पंचायत मंत्री प्रह्लाद पटेल करेंगे। मेले का समय सुबह 11 बजे से रात 9:30 बजे तक तय किया गया है। मेले में विशेष रूप से ग्रामीण अंचल से आए हुए उत्पादों के स्टॉल लगेंगे। इस मेले का आयोजक मध्यप्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन है, जिसका उद्देश्य आजीविका मिशन से जुड़ी स्व-सहायता समूह की महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण है।

रसायन मुक्त साग-सब्जियों वाला पहला मेला- भोपाल हाट में आयोजित होने वाले आजीविका फ्रेश मेले में पहली बार प्रदेश के अलग-अलग ग्रामीण इलाकों से लाई गईं केमिकल फ्री सब्जियां और फल बेचे जाएंगे। इसके अलावा भोपाल के लोग यहां से केमिकल फ्री अनाज भी खरीद पाएंगे। मेले की आयोजक गरिमा साईं सुंदरम ने बताया कि प्राकृतिक वस्तुएं व खान-पान से जुड़ी दुकानें तो पहले भी लगाई जा चुकी हैं। लेकिन

इस बार विशेष तौर पर सब्जियों की दुकानें भी शामिल की जा रही हैं।

नरसिंहपुर की तुअर दाल और महुआ कुकीज भी- आजीविका मेले की खास बात ये है कि यहां पर मध्यप्रदेश के सभी जिलों और अंचलों के व्यंजन और क्षेत्रीय उत्पाद मिलेंगे। नरसिंहपुर की तुअर दाल और गुड़, बालाघाट का चिनौरी व सिवनी का जीरा शंकर चावल मिलेगा। महुआ के उत्पाद जिसमें कुकीज, लड्डू, नमकीन महुआ उपलब्ध रहेंगे। इसके अलावा आंवला कैंडी, मुरब्बा, त्रिफला जैसे प्रोडक्ट भी मिलेंगे।

50 रुपए में दाल-बाटी, 20 रुपए में रबड़ी जलेबी

खाने पीने के शौक रखने वालों के लिए भी मेले में बहुत से लजीज व्यंजन सस्ते दामों पर मिलने वाले हैं। जिसमें दाल-बाटी, बेड़ई, पोहा, मुंगौड़े, रबड़ी-जलेबी व कोदो, कुटकी जैसे मिलेट्स यानि मोटे अनाज से बनी खीर, लड्डू और कुकीज भी उपलब्ध होंगे।

पिछले मेले में हुई थी 7 लाख की सेल

मेला आयोजक गरिमा साईं सुंदरम ने कहा कि इसके पहले भी रक्षाबंधन के मौके पर दो-दिवसीय मेला लगा था। जिसमें करीब 7 लाख रुपए की बिक्री हुई थी। और इस बार भी इसी तरह की बिक्री की उम्मीद है। मुख्य शहर में इस मेले का आयोजन करने का उद्देश्य भोपाल के लोगों को यह बताना है कि मध्यप्रदेश के अलग-अलग इलाकों में किस तरह का खान-पान और प्राकृतिक उत्पाद बनाया व बेचा जाता है। मेले में सभी 55 जिलों से आने वाले दुकानदारों से किसी भी तरह का किराया नहीं लिया जाएगा।

बाढ़ में लोगों की मदद की सिंधिया ने ट्रैक्टर दिया

शिवपुरी में युवक की मां से मंत्री ने कहा- यह अब मेरा बेटा भी

शिवपुरी (नप्र)। शिवपुरी जिले के कोलारस विधानसभा क्षेत्र के लिलवारा गांव के साहसी युवक गिर्राज प्रजापति को केंद्रीय मंत्री एवं गुना सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया ने शुक्रवार को नया ट्रैक्टर भेंट किया। बीती रात मुआवजा वितरण कार्यक्रम में सिंधिया ने गिर्राज की मां कृष्णा प्रजापति से भावुक अंदाज में कहा था कि 'अब गिर्राज सिर्फ आपका बेटा नहीं, यह मेरा बेटा भी है।' अगले ही दिन उन्होंने अपनी घोषणा पूरी करते हुए नया ट्रैक्टर सौंप दिया।

29 जुलाई को सिंध नदी में आई बाढ़ से लिलवारा गांव पूरी तरह पानी से घिर गया था। उस दौरान गांव के ही गिर्राज प्रजापति ने साहस दिखाते हुए अपनी जान जोखिम में डालकर रातभर ट्रैक्टर-ट्रॉली से ग्रामीणों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाया। मदद करते-करते उसका ट्रैक्टर पूरी तरह खराब हो गया, जिससे परिवार पर संकट खड़ा हो गया।

मां ने सिंधिया से मदद देने कहा था- बीती रात जब सिंधिया लिलवारा गांव मुआवजा वितरण कार्यक्रम में पहुंचे तो गिर्राज की मां कृष्णा प्रजापति ने मंच से मदद की गुहार लगाई। इस दौरान जनप्रतिनिधियों और ग्रामीणों ने भी गिर्राज के अदम्य साहस और उसके ट्रैक्टर खराब होने की पूरी जानकारी दी। तभी सिंधिया ने मंच से गिर्राज को बुलाकर सराहना की और उसकी मां से कहा आपका बेटा अब मेरा बेटा भी है। साथ ही उन्होंने यह भी ऐलान किया कि सुबह तक गिर्राज को नया ट्रैक्टर उपलब्ध करा दिया जाएगा।

ट्रैक्टर पर बैठाकर ले गए सिंधिया

शुक्रवार को सिंधिया एक बार फिर लिलवारा गांव पहुंचे। यहां पहले से नया ट्रैक्टर तैयार खड़ा था। सिंधिया खुद ट्रैक्टर चलाकर करीब एक किलोमीटर तक सभा स्थल तक आए। इसके बाद उन्होंने गिर्राज को ट्रैक्टर पर बैठाया और उसकी चाबी सौंप दी। इस दृश्य पर तालियों की गड़गड़ाहट गूंज उठी और ग्रामीणों ने सिंधिया के इस कदम का स्वागत किया।

गिर्राज की मां कृष्णा प्रजापति ने मंच से आभार जताते हुए कहा कि बेटे ने गांव को बचाने के लिए अपनी जान दांव पर लगाई थी, उसका ट्रैक्टर खराब हो गया था। आज सिंधिया जी ने उसे नया ट्रैक्टर देकर हमारी बड़ी चिंता दूर कर दी है। एक ओर आपदा में गिर्राज का साहस मिसाल बन गया, वहीं दूसरी ओर सिंधिया ने अपने संवेदनशील अंदाज से ग्रामीणों का दिल जीत लिया।

सिंधिया ने ट्रैक्टर पर युवक के साथ बैठकर फोटो शेयर कर एक्स पर लिखा, अपनों के लिए हर पल समर्पित आपदा की घड़ी में साहस का जीवंत उदाहरण है मेरे शिवपुरी के लिलवारा गांव का यह मेरा नौजवान बेटा गिर्राज। बाढ़ के बीच अपनी जान की परवाह किए बिना लोगों की मदद करने वाले इस जांबाज बेटे के लिए दुनिया की हर भेंट छोटी है। लेकिन उसके पराक्रम और हुए नुकसान की भरपाई के लिए सम्मानस्वरूप उसे वायदे अनुसार 12 घंटों के भीतर ट्रैक्टर भेंट की। गिर्राज जैसे निस्वार्थ कर्मवीर ही मेरे जनसेवा पथ के प्रेरणास्रोत हैं।

यात्रियों से भरी बस ने टक्कर मारी, मौत

दो साल पहले शादी हुई थी, 9 माह की बेटी का पिता था; फील्ड से लौटते वक्त हादसा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के सूखी सेवनिया टोल के करीब यात्रियों से भरी शक्ति ट्रैवल्स की बस ने इंजीनियर को कुचल दिया। हादसे के बाद आरोपी चालक और कंडक्टर बस को मौके पर छोड़कर फरार हो गए। ग्रामीणों ने एम्बुलेंस की मदद से घायल को हमीदिया अस्पताल पहुंचाया।

इलाज के दौरान शुक्रवार सुबह 7 बजे युवक की मौत हो गई। हादसा गुरुवार शाम करीब 6:30 बजे हुआ था। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। शुक्रवार दोपहर को पोस्टमार्टम के बाद बॉडी को परिजनों के हवाले कर दिया गया है।

बी.टेक, एमबीए कर मार्केटिंग जॉब में था

जानकारी के मुताबिक पुनीतधर द्विवेदी (34) पुत्र भास्कर द्विवेदी मानस कॉलोनी फेस 1 मित्तल कॉलेज के पास करोंद में रहता था। भोपाल के प्राइवेट कॉलेज की ई.सी ब्रांच से बी.टेक करने के बाद उसने सागर के एक प्राइवेट कॉलेज से एमबीए किया। फिलहाल युवक व्ही गार्ड कंपनी में टेरिटरी मैनेजर के पद पर काम कर रहा था।

सामने से आ रही थी तेज रफ्तार बस

भोपाल और आसपास के पांच जिले उसके अंडर में थे। विदिशा में कंपनी कर्मचारियों की मीटिंग लेकर गुरुवार की शाम को एक्टिवा से घर लौट रहा था। भोपाल-विदिशा रोड पर सूखी सेवनिया टोल के पास यात्री से भरी बस ने उसे सामने से जोरदार टक्कर मारी। इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया था।

दो साल पहले हुई थी अरेंज मैरिज

पुनीतधर के पिता एमपीईबी के अधिकारी रहे हैं और चार साल पहले रिटायर्ड हो चुके हैं। मृतक के बड़े भाई भी इंजीनियर हैं। दो साल पहले पुनीत ने मां-पिता की मर्जी से रीवा की रहने वाली युवती से अरेंज मैरिज की थी। नौ महीने पहले ही उसके घर बेटी ने जन्म लिया था।

बड़े तालाब में मिली युवक की लाश

गोताखोर की मदद से पानी से बाहर निकाला; शिनाख्त में जुटी पुलिस

भोपाल (नप्र)। भोपाल के वीआईपी रोड स्थित मंदिर के पास से पुलिस ने एक युवक के शव को कब्जे में लिया है। मृतक की उम्र करीब 40 वर्ष है, लेकिन उसकी शिनाख्त नहीं हो सकी है। मामले में तलैया पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

गोताखोर आसिफ शेख ने बताया कि शुक्रवार की शाम को आईटीएच के करीब मंदिर के पिछले हिस्से में तालाब के पानी में शव पड़ा दिखा था। राहगीरों की सूचना पर पुलिस की मौजूदगी में बॉडी को बाहर निकाला गया।

मृतक के शरीर पर कपड़े नहीं हैं। अनुमान लगाया जा रहा है कि तैरते समय डूबने से उसकी मौत हुई है। पुलिस मृतक की शिनाख्त की कोशिश कर रही है।

भोपाल में हुजूर एसडीएम ऑफिस की छत का प्लास्टर गिरा

पूरी फॉल सीलिंग नीचे आ गई; रात में हुई घटना, वरना बड़ा हादसा हो जाता

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोहेफिजा स्थित पुराना सचिवालय की बिल्डिंग की छत का प्लास्टर गिर गया। इसमें हुजूर एसडीएम विनोद सोनकिया का ऑफिस है। घटना रात में हुई। यदि दिन में होती तो बड़ा हादसा हो सकता था। घटना के बाद एसडीएम सोनकिया अब कोर्ट में ही बैठने लगे हैं।

घटना बुधवार-गुरुवार देर रात की है। शुक्रवार को एसडीएम ने पीडब्ल्यूडी से मरम्मत कराने को कहा। गुरुवार को वे हथाईखेड़ा में बिल्डिंग तोड़ने के दौरान मौजूद थे। इसलिए ऑफिस में नहीं आ सके थे। शुक्रवार को उन्होंने अपनी बैठक व्यवस्था कोर्ट में ही कर ली। एसडीएम सोनकिया ने बताया कि कोर्ट रूम में बैठकर काम निपटा रहे हैं। पीडब्ल्यूडी से बिल्डिंग के सुधार की बात कही है।

मुख्य सचिव की दावेदार अलका को केंद्र में नई जिम्मेदारी

एमपी कैडर के 2 आईएएस अफसरों के विभाग बदले, कांताराव अब जल शक्ति मंत्रालय में

भोपाल (नप्र)। मुख्य सचिव अनुराग जैन के रिटायरमेंट के बाद इस पद के लिए दावेदारी कर रही केंद्र में पदस्थ सचिव स्तर की अधिकारी अलका उपाध्याय को केंद्र ने नई जिम्मेदारी सौंप दी है। अलका को अल्पसंख्यक मंत्रालय में सचिव बनाया गया है। इस आदेश के बाद फिलहाल अलका उपाध्याय की एमपी वापसी की राह बंद हो गई है। वहीं, एमपी कैडर के एक अन्य अधिकारी वी.एल. कांताराव अब जल शक्ति मंत्रालय में सेवाएं देंगे।

9 दिन बाद सेवानिवृत्त हो रहे मुख्य सचिव अनुराग जैन की सेवाओं के एक्सटेंशन के बीच नए मुख्य सचिव की दावेदारी भी तेजी से चल रही है। अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा, अशोक बर्णवाल, केंद्र में पदस्थ मनोज गोविल के साथ केंद्र सरकार के पशुपालन और डेयरी विभाग की सचिव के रूप में पदस्थ अलका उपाध्याय का नाम भी इस पद के लिए दौड़ में शामिल था।

क्योंकि अलका पिछले कुछ महीनों से एमपी के दौरे करने को लेकर एक्टिव रही हैं। साथ ही यहां की प्रशासनिक गतिविधियों की जानकारी भी लेती रही हैं। शुक्रवार को केंद्र की कैबिनेट अपॉइंटमेंट कमेटी डीओपीटी की ओर से 14 अफसरों को नई जिम्मेदारी सौंपने के आदेश जारी किए गए हैं। इसमें अलका उपाध्याय और वी.एल कांताराव का भी नाम है। जो एमपी कैडर के आईएएस अधिकारी हैं।

आज जारी आदेश में अलका उपाध्याय को केंद्रीय सचिव पशुपालन और डेयरी विभाग से हटाकर राष्ट्रीय अल्पसंख्यक मंत्रालय के अंतर्गत राष्ट्रीय अल्पसंख्य आयोग का सचिव पदस्थ किया गया है। इसी तरह एमपी कैडर के अफसर व केंद्रीय खान मंत्रालय के सचिव वी. एल कांताराव को डिपार्टमेंट ऑफ वाटर रिसोर्सेस रिवर डेवलपमेंट एंड गंगा रेजुविनेशन जल शक्ति मंत्रालय में पदस्थ किया गया है। यह विभाग अभी संघ शासित प्रदेश के आईएएस देबाश्री मुखर्जी के पास था। जिन्हें अब स्किल डेवलपमेंट एंड एंटरप्रिन्योरशिप विभाग में सचिव के पद पर पदस्थ किया गया है।

डीओपीटी द्वारा जारी आदेश में अलग-अलग राज्यों के जिन अन्य अफसरों के विभागों के दायित्वों में फेरबदल किया गया है। उनमें रजित पुन्हानी, विजय कुमार, सुकृति लिखी, रंजना चोपड़ा, नरेश पाल गंगवार, नीरज वर्मा, आतिश चंद्रा, पियूष गोयल, संजय गर्ग, रोली सिंह, त्रिशालजीत सेठी के नाम शामिल हैं।

सिंघार बोले- छिंदवाड़ा कलेक्टर आरएसएस की चड्डी पहन लें

नेता प्रतिपक्ष ने कहा- वो इतना डरपोक है कि भाजपा का गुलाम है

भोपाल (नप्र)। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने छिंदवाड़ा कलेक्टर की कार्यशैली पर सवाल उठाते हुए बयान दिया है। उन्होंने कहा कि छिंदवाड़ा कलेक्टर इतना डरपोक है कि भाजपा का गुलाम है। मैंने कहा है कि अगर गुलाम है तो भाजपा, आरएसएस की चड्डी पहन लें।

सिंघार गुरुवार को धार पहुंचे थे। यहां वे कांग्रेस जिला अध्यक्ष बने स्वतंत्र जोशी के पदभार ग्रहण कार्यक्रम में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने कार्यकर्ताओं को संबोधित भी किया।

इस दौरान उन्होंने मंच से कहा, आप कलेक्टर हो। नौकरी जॉइन करते हो तो कहा जाता है कि जनता का नौकरशाह, लेकिन ये तो भाजपा के नौकर बन गए। सिंघार ने इसे लेकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक वीडियो भी शेयर किया है।

छिंदवाड़ा में कुत्ते को ज्ञापन दे दिया

उमंग सिंघार ने कहा, मैंने छिंदवाड़ा में कहा था कि कलेक्टर नहीं आया तो देख लेना। जब कलेक्टर नहीं आया तो मैंने एक कुत्ते को बुलाया और उसे छिंदवाड़ा कलेक्टर बनाया। फिर मैंने और जीतू पटवारी ने उसको ज्ञापन दे दिया। ये बीजेपी की सरकार है और अधिकारी ऐसे डर रहे।

कलेक्टर पार्टीबाजी करेगा उसे बताएंगे....

सिंघार ने कहा, आप क्यों डर रहे हो, क्या हमारी सरकार नहीं आएगी? जरूर आएगी और जो दादागिरी करेगा उसके साथ कांग्रेस पार्टी क्या करेगी। मैं सभी आईएएस की बात नहीं कर रहा, लेकिन जो कलेक्टर और आईएएस पार्टीबाजी करेगा। तो फिर हम भी बताएंगे कि राम नाम सत्य भी होता है।

छिंदवाड़ा कलेक्टर पर इसलिए भड़की कांग्रेस

छिंदवाड़ा में 20 अगस्त को पूर्व सांसद नकुल नाथ ने खाद संकट और किसानों की समस्याओं को लेकर आंदोलन किया था। इस प्रदर्शन में पीसीसी चीफ जीतू पटवारी, नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार सहित कांग्रेस के कई सीनियर नेता शामिल हुए थे। कांग्रेस नेता कलेक्टर ऑफिस ज्ञापन देने पहुंचे तो कलेक्ट्रेट के बाहर पुलिस ने उन्हें रोक लिया।

कांग्रेस नेताओं ने कलेक्टर को ज्ञापन देने के लिए बुलाया। जब कलेक्टर नहीं आए तो नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने एक कुत्ते को बुलवाया और उसके गले में ज्ञापन बांध दिया।

राजा रघुवंशी मर्डर केस में राज के दोस्तों से पूछताछ

फरारी के दौरान संपर्क में थे; कोर्ट में बतौर गवाह पेश कर सकती है मेघालय पुलिस

इंदौर (नप्र)। इंदौर के राजा रघुवंशी हत्याकांड में शिलॉन्ग कोर्ट ने मेघालय पुलिस को 1 सितंबर को चालान पेश करने के लिए कहा है। इसी सिलसिले में मेघालय पुलिस की एसआईटी इंदौर में है। टीम ने फरारी के वक्त संपर्क में रहे राज कुशवाहा के दोस्तों से पूछताछ की है। हालांकि, कोई खास जानकारी निकलकर नहीं आई है।

एसआईटी ने बाणगंगा इलाके में उस मोबाइल दुकान पर भी जाकर जांच की, जहां से राज ने दो सिम कार्ड खरीदे थे। इन सिम कार्डों में से एक आनंद कुर्मी के दस्तावेजों पर खरीदा गया था, जो हत्याकांड में शामिल था।

एसआईटी ने राज के दोस्त भरत जाधव को पूछताछ के लिए क्राइम ब्रांच बुलाया था। अभिषेक मोरे से भी पूछताछ की। दोनों ने बताया कि राज और वे एक ही कॉलोनी में रहे हैं। यहीं दोस्ती हुई थी। हालांकि, सोनम और राज के रिश्तों को लेकर उनकी कोई चर्चा नहीं हुई थी। वे बस इतना जानते थे कि राज एक प्लायवुड कंपनी में काम करता था।

एसआईटी बना सकती है गवाह

मामले में सबूत मिटाने के आरोपी शिलोम जेम्स, भूपेंद्र भदौरिया और बलवीर अहिरवार को जमानत मिल चुकी है। ऐसे में एसआईटी अब नए सिरे से सबूत जुटाकर आरोपियों की जमानत निरस्त कराने की तैयारी कर रही है। संभावना जताई जा रही है कि इंदौर में जिन लोगों से पूछताछ की गई है, उन्हें केस में गवाह बनाया जा सकता है।

जमानत याचिका पर आपत्ति लेंगे राजा के परिजन

अब तक जेल में बंद किसी भी आरोपी का निजी वकील सामने नहीं आया है। हालांकि, राजा रघुवंशी के परिजन को जानकारी मिली है कि सोनम के परिवार ने उसके लिए एक वकील नियुक्त किया है।

राजा के परिजन के अनुसार, उनके वकील को चालान पेश होने की सूचना मिल चुकी है। वे फिलहाल आरोपियों की जमानत याचिकाओं पर आपत्ति दर्ज करवा रहे हैं। एक सप्ताह पहले भी सभी आरोपियों की ओर से जमानत याचिकाएं लगाई गई थीं। तब भी राजा के परिवार के वकील ने कोर्ट में उपस्थित होकर जमानत का विरोध किया था।

शिलॉन्ग में खाई में मिला था राजा का शव

इंदौर के ट्रांसपोर्ट कारोबारी राजा रघुवंशी की 11 मई को सोनम के साथ शादी हुई थी। 20 मई को राजा और सोनम हनीमून के लिए इंदौर से मेघालय रवाना हुए थे। 22 मई को दोनों सोहरा की यात्रा पर निकले थे। उन्होंने एक एक्टिवा भी किराए पर ली थी।

मुस्लिम युवक बोला- प्रेमानंद महाराज को किडनी देना चाहता हूं

वे सनातन के साथ राष्ट्रभक्ति का काम कर रहे; संत की दोनों किडनियां फेल हैं

इटारसी/नर्मदापुरम (नप्र)। नर्मदापुरम के एक मुस्लिम युवक ने वृंदावन के संत प्रेमानंद महाराज को किडनी डोनेट करने की पेशकश की है। इटारसी में न्यास कॉलोनी निवासी आरिफ खान चिश्ती ने कलेक्टर सोनिया मीणा के जरिए प्रेमानंद महाराज को पत्र लिखा है। उनको ई-मेल और व्हाट्सएप पर मैसेज भी भेजा है। चिश्ती ने कहा है कि वे प्रेमानंद महाराज से प्रभावित हैं। प्रेमानंद सनातन धर्म के साथ-साथ राष्ट्रभक्ति का काम कर रहे हैं।

बता दें कि प्रेमानंद महाराज किडनी की ऑटोसोमल डोमिनेंट पॉलीसिस्टिक बीमारी से पीड़ित हैं। उनकी दोनों

किडनी फेल हो गई हैं।

यह व्यक्तिगत निर्णय, समाज की सोच महत्वपूर्ण नहीं- पत्र में चिश्ती ने लिखा है- प्रेमानंद महाराज हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रतीक हैं। वे समाज में प्रेम और शांति का संदेश देते हैं। मीडिया से पता चला कि महाराज की दोनों किडनियां खराब हैं इसलिए मैं अपनी एक किडनी उनको दान करना चाहता हूं। आरिफ का कहना है कि समाज की सोच उनके लिए महत्वपूर्ण नहीं है। यह उनका व्यक्तिगत निर्णय है।

आरिफ के परिवार में पिता और तीन भाई हैं। मां का निधन हो चुका है। आरिफ सबसे छोटे हैं। तीनों बड़े भाई कोरियर में काम करते हैं। उनकी शादी एक साल पहले हुई है। पत्नी भी उनके किडनी दान को सपोर्ट कर रही हैं।

राधारानी के भक्त, 9वीं क्लास में त्याग दिया परिवार- प्रेमानंद महाराज का असली नाम अनिरुद्ध कुमार पांडे है। उनका जन्म 1969 में कानपुर के सरसौल ब्लॉक के अखरी गांव में हुआ था। शुरुआती पढ़ाई गांव के ही स्कूल से की। पांचवीं कक्षा से उनका रुझान आध्यात्म की ओर बढ़ने लगा। 9वीं क्लास में आते ही उन्होंने परिवार त्याग दिया। प्रेमानंद महाराज राधा रानी के भक्त हैं। उनके दर्शन और धार्मिक चर्चा करने के लिए रोजाना हजारों श्रद्धालु आश्रम पहुंचते हैं।

संपादकीय

शुद्धिकरण या विपक्ष की नसबंदी ?

केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने बुधवार को लोकभसा में जो 130वां संशोधन बिल प्रस्तुत किया, उस पर हंगामा होना ही था। मोदी सरकार इसे राजनीति को भ्रष्टाचार के मुक्त करने का कानूनी प्रयास बता रही है तो विपक्ष का सीधा आरोप है कि यह विपक्षी सरकारों को अस्थिर करने तथा उन्हें सत्ता से बेदखल करने की नीयत से लाया गया कानून है। इसका दुरूपयोग होने की संभावना ही ज्यादा दिख रही है। हालांकि सरकार का कहना है कि इस कानून से वो ही डरेंगे, जो भ्रष्ट हैं। संसद के दोनों सदनों में इस बिल पर विपक्षी सदस्यों ने भारी हंगामा किया। एक सदस्य ने तो बिल के टुकड़े कर अमित शाह पर ही उछाल दिए। विपक्ष का यह भी कहना था कि बिल संविधान की भावना के विपरीत और जनादेश को अपमानित करने वाला है। लोकसभा में यह बिल प्रस्तुत करते हए बिल के प्रावधानों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि बिल के अनुसार प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री या किसी भी मंत्री के खिलाफ कोई केस दर्ज होता है और वह तीस दिन जेल में रहता है, तो स्वतः मंत्री पद से हट जाएगा। इस बिल का कांग्रेस, टीएमसी, राजद के साथ ही एआईएमआईएम ने भी कड़ा विरोध किया है।

विपक्षी दलों ने कहा कि मोदी सरकार वन मैन, वन पार्टी लागू करना चाहती है। ये बिल पास हो गया, तो लोकतंत्र पूरी तरह खत्म हो जाएगा। कहने को पीएम, सीएम सब पर लागू होगा, लेकिन ईडी और सीबीआई के अधिकारी, जिन्हें अमित शाह और प्रधानमंत्री मोदी ही चुनते हैं, वे उन्हीं के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने या उन्हें गिरफ्तार करने की कभी हिम्मत ही नहीं कर सकते। जाहिर है विपक्ष शासित राज्यों को गुलाम बनाने या उन्हें सत्ता से बाहर करने का यह जरिया बन जाएगा। टीएमसी की प्रमुख और बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि इस कानून का पुरजोर विरोध होगा तथा इसे किसी भी कीमत पर पारित नहीं होने दिया जाएगा। देश में अब तक प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री या मंत्री के गिरफ्तार होने या जेल जाने पर इस्तीफा देने का कोई स्पष्ट नियम नहीं था। अरविंद केजरीवाल 156 दिन तिहाड़ जेल में रहते हुए भी दिल्ली के मुख्यमंत्री बने रहे। झारखंड के हेमंत सोरेन भी सीएम रहते जेल गए। तमिलनाडु के मंत्री सेंथिल बालाजी जेल में रहते हुए भी अपने पद पर बने रहे। सेंथिल को तो सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी के बाद ही इस्तीफा देना पड़ा था। विपक्ष का आरोपों को नकारते हुए गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि जनता का भरोसा कायम रखना लोकतंत्र की आत्मा है। मंत्री पद पर बैठा व्यक्ति अगर संदेह के घेरे में है, तो उसे पद छोड़ना ही चाहिए। यह प्रक्रिया स्वतः लागू होगी। अगर मंत्री कोर्ट से बरी हो जाता है, तो दोबारा पद पर लौट सकता है। हालांकि यह संविधान संशोधन बिल है, ऐसे में इसे पारित कराना आसान नहीं होगा। एक संभावना यह भी बन रही है कि अगर विपक्ष संयुक्त संसदीय समिति में शामिल होता है और उसके सुझावों को सरकार मान लेती है, जिसमें यह कहा जा सकता है कि न्यायिक हिरासत की बजाय सजा होने पर ही इस्तीफे को अनिवार्य बनाया जाए, तब संभावना बन सकती है कि विपक्षी दल उसका समर्थन करें। जेल वाली बात पर तो कोई सहमत नहीं होगा। विपक्ष की यह चिंता जायज है कि चूंकि केन्द्र में भाजपानीत सरकार बैठी है, इसलिए जांच एजेंसियों पर उसी का नियंत्रण है। ईडी, सीबीआई किसी के भी खिलाफ मामला दर्ज कर आरोपी को जेल भेज सकते हैं। यानी सवाल नीयत का है। सरकार कितनी भी सफाई दे, विपक्ष का उस पर सहमत होना कठिन है।

इस अशोभनीय स्थिति का अंत हो तो कैसे

चुनाव आयोग ने पत्रकार वार्ता में स्पष्ट बोला है कि या तो जो आरोप लगा रहे हैं उसका प्रमाण दें नहीं तो क्षमा मांगे। दूसरी ओर बिहार में वोट अधिकार यात्रा के नाम से यात्रा कर रहे राहुल गांधी ने सासाराम में यात्रा आरंभ करते हुए कहा कि न हम चुनाव आयोग से डरने वाले हैं और न तेजस्वी यादव। राहुल गांधी और उनके रणनीतिकारों – सलाहकारों तथा इनके पिछले लंबे समय से चुनाव आयोग और संपूर्ण चुनाव प्रणाली की साख पर चोट करने के लगातार अभियानों पर दृष्टि रखने वाले जानते हैं कि उनकी ऐसी ही प्रतिक्रिया आती रहेगी। चुनाव आयोग द्वारा पहले अपने आरोपों पर शपथ पत्र मांगने के विरुद्ध उनकी प्रतिक्रिया थी कि मुझे शपथ पत्र देने की आवश्यकता नहीं। उन्होंने यह तर्क दे दिया कि मैंने संविधान की शपथ लिया है तो उससे बड़ा शपथ क्या हो सकता है।

नजरिया

अवधेश कुमार

लेखक दिल्ली निवासी वरिष्ठ पत्रकार हैं।

यह अभूतपूर्व अशोभनीय और अनेक अर्थों में अस्वीकार्य व आपत्तिजनक स्थिति है। देश के कुछ नेता और राजनीतिक दल चुनाव आयोग के विरुद्ध संसद से सड़क तक अभियान चलाएं इसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी। अगर आईएनडीआईए सांसदों की बैठक में चुनाव आयोग के विरुद्ध महाभियोग प्रस्ताव जैसा प्रस्ताव लाने की बात उठी तो एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में इससे डरावनी स्थिति कुछ हो ही नहीं सकती। हालांकि इस सत्र का अवसान हो रहा है और इसमें प्रस्ताव आ नहीं सकता। दूसरे, प्रस्ताव आया भी तो सदस्य संख्या के हिसाब से यह गिर जाएगा। किंतु इस पर विचार होना ही अंदर से हिला देने वाला है।

चुनाव आयोग ने पत्रकार वार्ता में स्पष्ट बोला है कि या तो जो आरोप लगा रहे हैं उसका प्रमाण दें नहीं तो क्षमा मांगे। दूसरी ओर बिहार में वोट अधिकार यात्रा के नाम से यात्रा कर रहे राहुल गांधी ने सासाराम में यात्रा आरंभ करते हुए कहा कि न हम चुनाव आयोग से डरने वाले हैं और न तेजस्वी यादव। राहुल गांधी और उनके रणनीतिकारों - सलाहकारों तथा इनके पिछले लंबे समय से चुनाव आयोग और संपूर्ण चुनाव प्रणाली की साख पर चोट करने के लगातार अभियानों पर दृष्टि रखने वाले जानते हैं कि उनकी ऐसी ही प्रतिक्रिया आती रहेगी। चुनाव आयोग द्वारा पहले अपने आरोपों पर शपथ पत्र मांगने के विरुद्ध उनकी प्रतिक्रिया थी कि मुझे शपथ पत्र देने की आवश्यकता नहीं। उन्होंने यह तर्क दे दिया कि मैंने संविधान की शपथ लिया है तो उससे बड़ा शपथ क्या हो सकता है। साफ है कि जब वह बार-बार चुनाव आयोग को भाजपा का एजेंट बता रहे हो और आईएनडीआईए के घटकों से उन्हें समर्थन भी मिल रहा हो तो वे क्यों पीछे हटेंगे? भारतीय राजनीति में संवैधानिक संस्थाओं के प्रति गरिमा और मर्यादा का भाव होता तो चुनाव आयोग के विरुद्ध इस तरह की भाषा प्रयोग नहीं की जाती।

राहुल गांधी ने चुनाव आयोग पर सबसे बडा हमला करते हुए अपने 1 घंटे 11 मिनट के वक्तव्य में 21 पृष्ठों के पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन से साबित करने की कोशिश की कि चुनाव आयोग भाजपा की मदद करने के लिए मतदाता सूची में जबरदस्त गड़बड़ी करता है और जहां भाजपा को चुनाव में पराजित होना चाहिए वहां मतदाताओं की फर्जी संख्या के आधार पर जीत दिला देता है। चुनाव आयोग के विरुद्ध नई लड़ाई का आरंभ उन्होंने बिहार में 17 अगस्त से 2 सितंबर तक की वोट अधिकार यात्रा से कर दिया। इसका फोकस ही चुनाव आयोग और उसके द्वारा आरंभ एसाईआर यानी विशेष मतदाता पुनरीक्षण अभियान है। राहुल गांधी का पूरा अभियान सुनियोजित है। कांग्रेस पार्टी द्वारा एक वेब पोर्टल बनाकर लोगों से कहा गया है कि कि चोरी के वीरुद्ध जवाब दें तथा डिजिटल मतदाता सूची के मांग का समर्थन करें। कहने का तात्पर्य कि लंबी तैयारी से कांग्रेस पार्टी ने इसे आरंभ किया है। चूंकि इस तरह कभी राजनीतिक पार्टियों के नेताओं को चुनाव आयोग के विरुद्ध आरोप लगाते और अभियान छेड़ते नहीं देखा गया इसलिए यह निष्कर्ष निकालना कठिन है कि आखिर इसका परिणाम क्या आएगा? इसका अंत कैसे होगा? इसका अंत होगा या नहीं?

आखिर चुनाव आयोग क्या करे? राहुल गांधी ने कर्नाटक के मध्य बेंगलुरु संसदीय क्षेत्र के महादेवपूरा विधानसभा का अपने दृष्टि से आंकड़ा दिया उस पर पहले ही कर्नाटक चुनाव आयोग का स्पष्टीकरण आ चुका है। उन्होंने पांच विधानसभा में जीतने और एक में भाजपा के वोट बढ़ जाने से पराजय को चुनाव आयोग की चोरी बता दिया। उनके अनुसार दोनों पार्टियों को मिले वोटों का अंतर 32,707 था लेकिन महादेवपुरा की गणना में अंतर 1,14,046 का रहा। तो 1 लाख से ज्यादा वोटों की चोरी हुई। उन्होंने महाराष्ट्र और हरियाणा दोनों जगह भाजपा की बढ़त के लिए चुनाव आयोग को ही जिम्मेदार ठहरा दिया। पहले कर्नाटक चुनाव आयोग ने एक महिला मतदाता शकुन रानी द्वारा दो बार वोट डालने के आरोपों का खंडन करते हुए बताया कि आपने जो दस्तावेज दिए उसको मतदान अधिकारी के हस्ताक्षर वाले नहीं थे, आपको कहां से यह जानकारी मिली बताएं? अन्य मतदाता भी सामने आए तथा बताया कि वह उन्होंने एक ही जगह वोट डाला है। राहुल गांधी ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। उनको उत्तर देना भी नहीं है। उनको पता है कि महाराष्ट्र के धुले लोकसभा सीट पर। भाजपा भी पांच विधानसभा में आगे थी लेकिन मालेगांव सेंट्रल में कांग्रेस को 1 लाख 94000 वोट आ गए और वह जीत गई। राहुल गांधी इन तथ्यों से अप्रभावित होकर चुनाव आयोग के विरुद्ध अपने अभियान पर कायम हैं। उनके पहले के आरोपों पर भी चुनाव आयोग ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर उत्तर दिया। एक संवैधानिक संस्था

की सीमाएं होती है और वह यही कर सकता था। चुनाव आयोग ने वक्तव्य जारी किया कि आप फर्जी मतदाताओं का आरोप लग रहे हैं तो नियम के अनुसार शपथ पत्र दीजिए ताकि निर्धारित प्रक्रिया से जांच की जाए। आयोग ने नेताओं को बातचीत के लिए बुलाया तो राहुल गांधी सारे विपक्षी सांसदों को लेकर जाने लगे। यह क्या है?

चुनाव आयोग के पास कोई विकल्प बचा नहीं था तभी उसे पत्रकार वार्ता आयोजित कर उत्तर देना पड़ा। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने एक-एक प्रश्न का उत्तर दिया। उन्होंने यह भी कहा कि किसी मतदाता का नाम दो जगह होने का अर्थ नहीं है कि उसने दोनों जगह मतदान किया ही। इसका अर्थ था कि मतदाता सूची बनाने वालों से कई बार गलतियां हो सकती हैं। यह सच है। अपवादस्वरूप पूरे देश में ऐसे मतदाता होंगे जिनके नाम दो स्थानों पर हो सकते हैं। एक जगह पहले नाम रहा हो और उन्होंने वह जगह छोड़ने के बाद दूसरी जगह भी मतदाता के नाते पंजीकरण कराया हो और पहले वाले को रद्द नहीं कराया हो। कुछ लोग ऐसे भी हो सकते हैं जो अवसर मिलने पर दोनों जगह मतदान कर दें। किंतु चुनाव आयोग जानबूझकर योजनापूर्वक ऐसा कर रहा है और वह भी केवल भाजपा का वोट बढ़ाने के लिए यह आरोप भयानक है। अगर चुनाव आयोग किसी पार्टी के पक्ष में है तो हमारी पूरी चुनाव प्रणाली ही पतित है और इसका अंत होना चाहिए। बिना जन आधार के भाजपा चुनाव आयोग द्वारा भ्रष्ट प्रणाली से सत्ता प्राप्त कर रही है तो शासन पर उसकी नैतिक अधिकारही समाप्त हो जाता है। इस तरह यह जघन्य आरोप है। इससे हमारी पूरी लोकतांत्रिक प्रणाली है की साख ही प्रश्नों के घेरे में आ जाती है।

इस दृष्टि से देखें तो राहुल गांधी और उनके सुर में ताल मिलाते विपक्ष के इस अभियान की भयानक गंभीरता समझ में आती है। कहा जा रहा है कि आरोप चुनाव आयोग पर है और जवाब भाजपा दे रही है। चुनाव आयोग भी जवाब दे रहा है। गहराई से देखें तो केंद्रीय सत्ता में होने के कारण आरोप भाजपा पर ही है। आखिर चुनाव आयोग ऐसा कर रहा है तो उसके पीछे कुछ लालच या फिर सत्ता का दबाव ही हो सकता है। यानी भाजपा सत्ता पर कब्जा करने के लिए चुनाव आयोग में शीर्ष से नीचे तक ऐसे लोगों की नियुक्तियां करता है जो उनके लिए ही काम करे और न करने वालों के विरुद्ध परोक्ष तरीके से कदम उठाता है। किसी पार्टी पर यह आरोप लगाए कि उसकी सत्ता तो केवल चुनाव आयोग द्वारा वोट चोरी करने या लूटने के कारण है तो वह उत्तर देगा या नहीं? दूसरे , सरकार मानती है कि सारे आरोप आधारहीन एवं गलत इरादे से लगाए जा रहे हैं तो उसका स्वाभाविक दायित्व संवैधानिक संस्थाओं पर लगने वाले आरोपों के विरुद्ध खड़ा होना तथा इसका अंतिम सीमा तक खंडन करना है। सत्तासीन पार्टी या घटक द्वारा ऐसा न करने का अर्थ सारे आरोपों को मौन रहकर स्वीकार करना माना जाएगा। चुनाव चुनाव आयोग सुप्रीम कोर्ट नहीं है कि वह अपनी ओर से संज्ञान लेकर मुकदमा शुरू कर दे और सजा भी दे दे। लेकिन आरोप लगाना और खंडन करना भी अंतहीन नहीं हो सकता। प्रश्न यही है कि आखिर इस अशोभनीय स्थिति का अंत कैसे हो? उच्चतम न्यायालय की टिप्पणियां भी राहुल गांधी एवं विपक्ष को नहीं रोक पा रही। इसलिए स्थिति ज्यादा विकेट है।

मनोरंजन, रोजगार और जिम्मेदारी में संतुलन की तलाश

ऑनलाइन गेमिंग बिल

डॉ. सत्यवान सौरभ

लेखक स्तंभकार हैं।

भारत में डिजिटल क्रांति के बाद से मोबाइल और इंटरनेट ने जिस तरह लोगों के जीवन को प्रभावित किया है, उसमें ऑनलाइन गेमिंग का संसार सबसे अधिक आकर्षक और विवादित रहा है। स्मार्टफोन की बढ़ती पहुँच, तेज़ इंटरनेट और युवाओं के बीच डिजिटल प्लेटफॉर्म की लोकप्रियता ने इस क्षेत्र को तेजी से विस्तार दिया है। लेकिन जहाँ एक ओर ई-स्पोर्ट्स और कौशल-आधारित खेलों ने भारत को विश्व मानचित्र पर जगह दिलाई है, वहीं दूसरी ओर पैसे के दाँव पर खेले जाने वाले खेल, बेटिंग ऐप्स और जुए जैसी प्रवृत्तियों ने समाज और सरकार दोनों को चिंतित किया है। इसी पृष्ठभूमि में केंद्र सरकार ने हाल ही में ऑनलाइन गेमिंग बिल को मंजूरी दी है। यह बिल न केवल आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि भविष्य में भारत की डिजिटल नीति की दिशा भी तय करेगा।

यह बिल स्पष्ट रूप से कहता है कि कोई भी वास्तविक धन पर आधारित गेमिंग या ऑनलाइन सट्टेबाज़ी प्रतिबंधित होगी। इसके साथ ही ऐसे खेलों के विज्ञापन, प्रचार और वित्तीय लेन-देन पर भी रोक लगाने का प्रावधान है। इसका सीधा मतलब है कि बैंक और वित्तीय संस्थान किसी भी रूप में ऐसे खेलों से जुड़े लेन-देन को प्रोसेस नहीं करेंगे। इस प्रावधान से सरकार यह सुनिश्चित करना चाहती है कि पैसे के लालच में जुए जैसी प्रवृत्तियाँ समाज में न फैलें।

परंतु इस बिल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह ई-स्पोर्ट्स और कौशल-आधारित गैर-आर्थिक गेमिंग को बढ़ावा देता है। सरकार ने साफ किया है कि उसे खेल के रूप में ई-स्पोर्ट्स को प्रोत्साहित करना है। आने वाले समय में 'नेशनल ई-स्पोर्ट्स अथॉरिटी' जैसी संस्था की स्थापना की जा सकती है, जो ई-स्पोर्ट्स को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधि बनाने की दिशा में काम करेगी। यह कदम न केवल डिजिटल खेलों को वैधता देगा बल्कि उन लाखों युवाओं को भी अवसर देगा जो गेमिंग को कैरियर बनाना चाहते हैं।

इस बिल का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि इसके तहत सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) को केंद्रीय नियामक की भूमिका सौंपी गई है। मंत्रालय को यह अधिकार होगा कि वह गैर-पंजीकृत या अवैध गेमिंग प्लेटफॉर्म को ब्लॉक कर सके। यह व्यवस्था उपभोक्ताओं को धोखाधड़ी और अवैध गतिविधियों से बचाने के उद्देश्य से की गई है। भारत में अब तक ऑनलाइन गेमिंग से जुड़े नियम अलग-अलग राज्यों में अलग थे। कहीं इसे वैध माना गया तो कहीं प्रतिबंधित। ऐसे में एक राष्ट्रीय स्तर की रूपरेखा बनाना समय की मांग थी।

यह बिल केवल नियम-कानून का दस्तावेज़ नहीं है बल्कि इसके पीछे गहरे सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारण भी हैं। पिछले कुछ वर्षों में देखा गया है कि ऑनलाइन बेटिंग और वास्तविक धन से जुड़े खेलों की लत ने कई युवाओं की ज़िंदगियाँ बर्बाद कर दी हैं। कई मामलों में लोगों ने कर्ज़ लेकर खेला और परिवार तबाह हो गए। बच्चों में भी मोबाइल गेम्स की लत मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा असर डाल रही है। सरकार को यह भी एहसास है कि इस समस्या को रोकना उतना ही ज़रूरी है जितना मादक पदार्थों की लत को रोकना। कई विशेषज्ञों ने तो इसे नशे से भी खतरनाक बताया है क्योंकि यह बिना किसी भौतिक पदार्थ के सीधे दिमाग़ पर नियंत्रण कर लेती है।

हालाँकि उद्योग जगत का पक्ष बिल्कुल अलग है। गेमिंग इंडस्ट्री का कहना है कि इस बिल से लगभग दो लाख नौकरियों पर खतरा मंडराने लगा है और सरकार को हर साल मिलने वाले बीस हज़ार करोड़ रुपये के जीएसटी राजस्व पर भी असर पड़ सकता है। 'ड्रीम11', 'गेम्स24×7', 'विन्ज़ो' जैसी कंपनियाँ लंबे समय से करोड़ों रुपये का कारोबार कर रही हैं। उनका कहना है कि यदि घरेलू प्लेटफॉर्म को पूरी तरह रोक दिया गया तो उपयोगकर्ता विदेशी और ऑफशोर प्लेटफॉर्म की ओर रुख करेंगे, जहाँ न तो सरकार का कोई नियंत्रण होगा और न ही उपभोक्ताओं की सुरक्षा। इससे उल्टा नुकसान ही होगा।

इस बहस में दोनों पक्षों की अपनी-अपनी दलीलें हैं। सरकार का तर्क है कि समाज को जुए और नशे की लत से बचाना ज़रूरी है, वहीं उद्योग जगत मानता है कि यह क्षेत्र देश की डिजिटल अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा है और इसे खत्म करना युवाओं के रोजगार और नवाचार दोनों के लिए नुकसानदायक होगा। असली चुनौती यही है कि सही संतुलन कैसे कायम किया जाए।

बिल के समर्थकों का कहना है कि इस कदम से न केवल सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित होगी बल्कि युवाओं की ऊर्जा सही दिशा में लगेगी। ई-स्पोर्ट्स को प्रोत्साहन देकर भारत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मेडल जीत सकता है, जैसा कि हमने बैडमिंटन, कुश्ती या क्रिकेट में देखा है। इसके अलावा गैर-आर्थिक गेम्स को बढ़ावा देने से बच्चों का मनोरंजन भी सुरक्षित दायरे में रहेगा।

दूसरी ओर आलोचकों का मानना है कि सरकार को 'पूर्ण प्रतिबंध' की बजाय 'कड़े नियमन' का रास्ता चुनना चाहिए था। यदि धन-आधारित गेमिंग को लाइसेंस प्रणाली और कड़े कराधान के तहत नियंत्रित किया जाता तो न केवल सरकार को राजस्व मिलता बल्कि उपभोक्ताओं की सुरक्षा भी बनी रहती। पूरी तरह प्रतिबंध लगाने से समस्या यह है कि लोग भूमिगत या विदेशी प्लेटफॉर्म की ओर भागेंगे और सरकार का नियंत्रण और भी कमजोर हो जाएगा।

यह बहस केवल भारत तक सीमित नहीं है। विश्व के कई देशों में ऑनलाइन गेमिंग को लेकर अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। अमेरिका और यूरोप के कई हिस्सों में इसे सख्त नियमों और टैक्स प्रणाली के तहत वैध किया गया है। वहीं चीन जैसे देशों ने बच्चों के लिए गेमिंग के समय पर ही पाबंदी लगा दी है। भारत ने अब तक इस दिशा में कोई स्पष्ट राष्ट्रीय नीति नहीं बनाई थी, यही कारण है कि राज्यों के स्तर पर भ्रम और असमानता बनी रही।

अब सवाल यह उठता है कि आगे क्या होगा? यह बिल लोकसभा में पेश किया जाएगा और संभव है कि इसमें संशोधन हों। उद्योग जगत की चिंताओं को देखते हुए सरकार कुछ नरमी दिखा सकती है। उदाहरण के लिए 'फैंटेसी स्पोर्ट्स' को कौशल-आधारित खेल मानकर सीमित अनुमति दी जा सकती है। इसी तरह कराधान और नियमन के ज़रिए सरकार और उद्योग के बीच समझौता हो सकता है।

परंतु एक बात तय है कि यह बिल भारत की डिजिटल यात्रा का अहम पड़ाव है। यह देश को यह सोचने पर मजबूर करता है कि तकनीक और समाज का संतुलन कैसे बनाया जाए। तकनीक अपने आप में न अच्छी है न बुरी, उसका इस्तेमाल उसे अच्छा या बुरा बनाता है। यदि ऑनलाइन गेमिंग युवाओं को कैरियर, रोजगार और अंतरराष्ट्रीय पहचान दे सकती है तो यह सकारात्मक है। लेकिन यदि वही गेमिंग परिवारों को तोड़ दे, युवाओं को कर्ज़ में डुबो दे और अपराध को बढ़ावा दे, तो यह खतरनाक है।

इसलिए ज़रूरी है कि सरकार, उद्योग, समाज और परिवार- सभी मिलकर समाधान निकालें। अभिभावकों को बच्चों पर नज़र रखनी होगी, शिक्षा संस्थानों को डिजिटल साक्षरता सिखानी होगी, उद्योग जगत को आत्मनियंत्रण और पारदर्शिता अपनानी होगी और सरकार को नियमन और प्रोत्साहन के बीच संतुलन बनाना होगा।

ऑनलाइन गेमिंग बिल केवल एक कानून नहीं है, यह हमारे समाज के भविष्य की रूपरेखा है। यह हमें यह सोचने पर विवश करता है कि क्या हम डिजिटल क्रांति को सिर्फ मनोरंजन और जुए का साधन बनने देंगे या इसे शिक्षा, रोजगार और वैश्विक प्रतिस्पर्धा का अवसर बनाएँगे। आने वाले वर्षों में यह बिल किस रूप में लागू होगा और समाज पर इसका क्या असर पड़ेगा, यह देखने वाली बात होगी। लेकिन एक बात स्पष्ट है कि यह बहस भारत के हर घर तक पहुँचेगी, क्योंकि मोबाइल और इंटरनेट अब हर जेब में है और गेमिंग हर उम्र की पसंद।

मायाजाल पर चाबुक

ऑनलाइन गेमिंग

सूर्यदीप कुशवाहा

लेखक स्तंभकार हैं।

ऑनलाइन गेमिंग डिजिटल युग का अहम हिस्सा बन चुका है। आये -दिन खबरों में किस्सा है। यह एक ऐसा मायाजाल है जहां एक-दूसरे खिलाड़ी के साथ खेल सकते हैं। युवाओं और बच्चों के बीच ऑनलाइन गेमिंग की लत गांजा-शराब सी लग चुकी है जिससे यह उनके जीवन का उद्देश्य ही अंधकारमय हो रहा है। रियल गेम्स और ऑनलाइन गेमिंग के बीच अंतर है। इन मंतर के बीच में झूलते युवा और बच्चे हैं।वास्तविक खेलों में शारीरिक व्यायाम को बढ़ावा मिलता है जबकि ऑनलाइन गेम्स में शारीरिक व्यायाम की पूरी कमी होती है। यह केवल मानसिक लक्ष्ण प्रदान करता है जिससे ऑनलाइन गेमिंग की आदतें, मूल्यों और प्रतिभा पर नकारात्मक प्रभाव तो डाल ही रही है, इसके अलावा डिप्रैशन, चिंता और सामाजिक समसामयिक जैसे मानसिक विकार भी उत्पन्न कर रही है। हर साल करोड़ों लोग पैसे से जुड़ी ऑनलाइन गेमिंग में कई हजार करोड़ रुपए गंवाते हैं। ऑनलाइन गेमिंग की लत ने अक्सर लोगों के बर्बाद होने और आत्महत्या करने की खबरें आती रहती हैं।

युवा पीढ़ी इतनी डिजिटल फ्रेंडली है कि शौक-शौक में पहले फंसता है और वह ऑनलाइन गेम के दलदल में धंसता चला जाता है, उसे पता भी नहीं चलता। यहां तक कि कम आयु तक के बच्चों को भो इसका नशा हो चुका है। यह नशीले पदार्थ से भी ज्यादा खतरनाक है।रातोंरात मालामाल होने चक्कर में फंस जाते हैं जिससे निकलना आसान नहीं होता। गेमिंग एप्स के विज्ञापनों से अंआधुंध कमाई करने के लिए फिल्म स्टार और क्रिकेट के दिग्गज युवाओं को जोड़ कर जुए के दलदल में युवाओं को धकेल रहे हैं। मनी गेमिंग प्रवृत्ति गम्भीर खतरा बन चुकी है। सरकार ने लोगों के हित को प्राथमिकता देते हुए प्रमोशन एंड रेगुलेशन ऑफ ऑनलाइन गेमिंग बिल पारित कर दिया है। इसका स्वागत होना चाहिए। अपने देश के होनहार भविष्य को बचाना प्राथमिकता है। इस विधेयक के कानून बनने पर पैसे से जुड़ी सभी ऑनलाइन गेमिंग पर प्रतिबंध लग जाएगा। गूगल प्ले स्टोर से ऑनलाइन गेमिंग एप्स को कोई डाउनलोड नहीं कर पाएगा। विधेयक में गेम खेलने वालों को नहीं बल्कि उनको खिलवाने वालों को सजा होगी।ऐसे विधेयक का स्वागत है।

पैसे से जुड़े ऑनलाइन गेम खेलने वालों को सजा नहीं होगी। जो इस प्रकार का गेमिंग एप संचालित करेंगे, उनके लिए एक करोड़ तक का जुर्माना और तीन साल की कैद का प्रविधान किया गया है। प्रमुख धाराओं के अंतर्गत अपराधों को संज्ञेय और गैर-जमानती बनाया गया है। बच्चों और युवाओं को बर्बादी से बचाने के लिए सराहनीय पहल की है। यह एक तरह से खेल जुआ और सट्टेबाजी है, इसलिए इसे रोकना भी जरूरी है। हमारे बच्चे और युवा पीढ़ी भ्रमित न हो, इसके लिए उन्हें सही दिशा दिखाना जरूरी है। जब तक हम नैतिक रूप से ऑनलाइन गेमिंग से दूर रहने का संकल्प नहीं लेते तब तक प्रतिबंधों का असर में कुछ कसर दिखता रहेगा। इसके लिए खुले मैदानों में खेले जाने वाले खेलों को गांवों व महानगरों तक प्रमोट करना होगा। हमें ही आगे आकर बच्चों के भविष्य को संवारना होगा। ऑनलाइन गेमिंग मायाजाल पर चाबुक के लिए सरकार को साधुवाद!

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

क्योंकि इंसान, कुत्तापना से बाज नहीं आ रहा

व्यंग्य

डॉ. प्रेमचंद द्वितीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

एक स्थान से दूसरे स्थान पर पकड़कर, दुत्कार कर उतारे गए श्वान नई जगह को देखकर अचंभित होते हैं। डरे, सहमे अपनी पूंछ दबाकर अपना मुकाम हासिल करने के लिए संघर्ष करते हैं। उनकी इधर से उधर पहुंचने की आवारगी से वे आवारा की गिनती में आते हैं। जब देश की शीर्ष कोर्ट ने हम आवारा कुत्तों का संज्ञान लेकर डॉग शेल्टर रूम में डालने की बात कही तो आवारा कुत्तों का समूह इकट्ठा हुआ और आपस में चर्चा की। कि शीर्ष कोर्ट का भला हो कि हमें शेल्टर होम में डालने जैसा निर्णय लिया वरना हम गली-गली, गांव-गांव में एक गांव से दूसरे गांव एक शहर से दूसरे शहर में भटक भटक कर कुत्ते की मौत ही मर जाते।कम से कम हमारा कोई आशियाना तो होगा।

खैर आवारा कुत्तों ने इकठ्ठा होकर इस मसले पर आवारा कुत्तों की एक मीटिंग बुलाई। मीटिंग की अध्यक्षता सीनियर आवारा डॉग लालू ने की। अपने आवारापन का लंबा अनुभव लिए लालू ने अपनी जिंदगी चुनिंदा घर और उनके परिवारजनों का असीम प्यार मोहल्ले में पाकर पूरी कर ली थी। यहां तक कि जब भी मोहल्ले में आवारा लोगों की, नहीं कुत्तों को पकड़ने का अभियान चलता तो मोहल्ले के लोग उसे छुपा देते हैं और वह निकाय की पकड़ से बाहर रह जाता।मीटिंग में युवा डॉग, कालू, बोला हमने आवारा तौर पर पूरी जिंदगी बीता दी, कभी इस घर तो कभी उस घर, कभी ओटले पर, तो कभी सीढ़ियों पर जिंदगी बिताने वाले हम आवारा क्या जानेंगे की डॉग शेल्टर होम क्या होते हैं।अरे सुप्रीम कोर्ट ने हम आवारा को छत तो उपलब्ध कराने का निर्णय लिया वरना हमारी दुश्मन मानव जाति जिसमें कई आवारा लोग होते हैं वे, कुत्तापना, कर हमें बदनाम करते हैं।वह न जाने क्या-क्या करते पर आवारा नहीं कहलाते हैं। और हम वफादारी में अव्वल है मोहल्ले की सुरक्षा करते हैं, वोटो की तरह चोरी करना तो ठीक चोर को ठिकाने लगा देते हैं।हमें शेल्टर होम बने बनाए मिलेंगे।

और मनुष्यों को तो रोटी कपड़ा मकान में, मकान के लिए कई चक्कर काटने पड़ते हैं तब भी बगैर लिए दिए आवास की किस्त नहीं मिलती है।कम से कम हमारे आवारापन को दूर करने के लिए शेल्टर में अपनी जिंदगी गुजर तो पाएंगे। इस पर युवा पैंथर बोला जिंदगी भर, कुत्ता पना,करने वाले इंसान के साथ हम, इंसानपना, बता दे तो भी वे हमारे पन को छिन कर कुत्ता पना किए बगैर नहीं मानते है।लेकिन हम इंसानपने पर कायम है।भले ही आवारा है लेकिन इंसानों के प्रति हमारे मन में दया एवं करुणा है इसी का नतीजा है कि हमारे डॉग शेल्टर होम बनाने की जिम्मेदारी भी इंसानों की है। जिससे कमिशन खोर अधिकारी, कर्मचारी, नेता से लेकर इंजीनियर, बनाने वाले ठेकेदार लगभग सभी के, वारे न्यारे,हो जाएंगे।

इस पर कुरकुरिए से किशोर अवस्था में आवारापन की दहलीज पर आए नए युवा झामरे कुत्ते ने बोला अरे हम कथित आवारा कुत्तों को जितना आवारा समझते हैं, लेकिन ऊपर वाले ने हर घर और ग्रहणी को आखिरी रोटी हमारे लिए बनाने और खिलाने की व्यवस्था की है।अरे पाले हुए देसी विदेशी कुत्तों को बंगले वालों की दुत्कारी रोटियां झूठा पनीला दूध मिलता है। लेकिन हमें सम्मानपूर्वक बनाई गई रोटियां मिलती है। इस रोटी के पुण्य से इंसान के कुत्तापने के पाप क्षय हो जाते हैं।

इस पर नए-नए छूट भैया नेता की तरह नया कुत्ता बोला हमें कोई छेड़ता है, हम पर कोई गुर्राता है तो हम उसे काट लेते हैं। लेकिन हमारा काटना रेबीज इंजेक्शन बनाने वाली कंपनी के लिए काफी फलीभूत होता है। सरकारी अस्पतालों में रेबीज का टोटा बताकर हम कुत्तों के काटने के फर्जी आंकड़े पेश कर देते हैं, यही नहीं हमसे सुरक्षित यही इंसान नसबंदी कराने पर हमारी नस्ल को नष्ट करने पर तुला हैं ! अरे आवारा घूम रहे कुत्तों से कुत्ता समुदाय अपना रुतबा कायम किए हुए, लेकिन विदेशी और मैडम की गोद में खेलने वाले कुत्तों को कोई कुत्ता ही नहीं सकता है।

अंत में अध्यक्ष उद्बोधन में बुजुर्ग कुत्ता मोती बोला हमारी इज्जत होती थी, हमें मोहल्ले का पहरेदार मानते थे तब तक हम काटने से परहेज करते थे।लेकिन बदलाव का दौर आया इंसान एक दूसरों को काटने लगा, एक दूसरे से दूर रहने,एक दूसरे की ईकन्नी करने से बाज नहीं आने लगा तो तब हमने अपने काटने की रफ्तार को तेज कर दिया।

बावजूद इसके वह हमारे लिए शेल्टर होम बनाने, रेबीज इंजेक्शन बनाने, हमारी नसबंदी करने के लिए, यह इंसान ही कुत्तापना कर उनका मतलब हल करना चाहते हैं।अरे यही नहीं हमारे नाम पर, पेटा, चला कर खुद का अनीति से पेट भरने से भी नहीं चूक रहे हैं।

हम कुत्ते और ऊपर से आवारा कुत्ते होते हुए भी, इंसानपने, को नहीं अपनाएंगे क्योंकि इंसान कुत्ता पना करने से बाज नहीं आ रहे हैं।

ट्रैवलॉग चर्चा

ब्रजेश कानूनगो

देवदूत जैसे उदार घुमक्कड़

कई ब्लॉगरों को हमने पवित्र स्वर्ण मंदिर दर्शन के लिए जाने के पूर्व सिक्ख पुरुषों द्वारा बांधी जाने वाली पगड़ियां बंधवाने की प्रक्रिया को देखा है। इसका वीडियो देखना भी बहुत दिलचस्प होता है। परिसर से पहले कारिडोर में अनेक ऐसी दुकानें हैं जहां से पगड़ी हेतु मनपसंद रंगीन कपड़े खरीद कर वहीं अपनी सेवाएं देते कर्मियों से अपने सिर पर उसे बंधवा सकते हैं। प्रक्रिया का वीडियो बना सकते हैं। दावुद का व्यक्तित्व बहुत प्रभावी है और जब वे अपने सिर पर पगड़ी धारण करते हैं तो पूरे सरदार लगते हैं। उनकी शानदार दाढ़ी उनके इस अवतार को आकर्षण और पूर्णता प्रदान कर देती है। अपने विडियोज में उन्होंने स्वर्ण मंदिर की पूरी सैर कराई। लंगर की रसोई का गहनता से दर्शन कराया। लंगर की पंगत में बैठकर भोजन किया। सबसे अंत में दान काउंटर पर जाकर एक बड़ी राशि वहां भेंट की। इन्ही वीडियो को देखते हुए ज्ञात हुआ कि दावुद जहां की सैर करते हैं और वीडियो बनाते हैं उससे होने वाली आय को उसी स्थान के लोगों में या कल्याण कार्यों में दान स्वरूप खर्च कर देते हैं। उनकी यह उदारता उनकी हर यात्रा के विडियोज में देखी जा सकती है।

अजरबैजान मूल के घुमक्कड़ और ब्लॉगर दावुद अकुंदजादा को पहली बार उनके अमृतसर यात्रा के वीडियो में देखा था। कद काठी में पूरे पठान लगते हैं, भारतीय वस्त्रों की दुकानों पर बड़ी मुश्किल उनके नाप का कुर्ता, शूज या जूता मिल पाता है। जहां जाते हैं दुकान में सबसे बड़े नाप का परिधान मांगते हैं।

बहरहाल, जब वे अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में गए तो अपने सिर पर पगड़ी बंधवाई। गुरु गोविंदसिंह द्वारा स्थापित सिद्धांतों के अनुसार खालसा सिक्खों द्वारा धारण किए जाने वाले पांचों ककार चीजों याने केश, कड़ा, कृपाण, कंघा और कच्छा के बारे में जानकारी ली, उन्हे रुचिपूर्वक देखा समझा भी।

कई ब्लॉगरों को हमने पवित्र स्वर्ण मंदिर दर्शन के लिए जाने के पूर्व सिक्ख पुरुषों द्वारा बांधी जाने वाली पगड़ियां बंधवाने की प्रक्रिया को देखा है। इसका वीडियो देखना भी बहुत दिलचस्प होता है। परिसर से पहले कारिडोर में अनेक ऐसी दुकानें हैं जहां से पगड़ी हेतु मनपसंद रंगीन कपड़े खरीद कर वहीं अपनी सेवाएं देते कर्मियों से अपने सिर पर उसे बंधवा सकते हैं। प्रक्रिया का वीडियो बना सकते हैं। दावुद का व्यक्तित्व बहुत प्रभावी है और जब वे अपने सिर पर पगड़ी धारण करते हैं तो पूरे सरदार लगते हैं। उनकी शानदार दाढ़ी उनके इस अवतार को आकर्षण और पूर्णता प्रदान कर देती है।

अपने विडियोज में उन्होंने स्वर्ण मंदिर की पूरी सैर कराई। लंगर की रसोई का गहनता से दर्शन कराया। लंगर की पंगत में बैठकर भोजन किया। सबसे अंत में दान काउंटर पर जाकर एक बड़ी राशि वहां भेंट की। इन्ही वीडियो को देखते हुए ज्ञात हुआ कि दावुद जहां की सैर करते हैं और वीडियो बनाते हैं उससे होने वाली आय को उसी स्थान के लोगों में या कल्याण कार्यों में दान स्वरूप खर्च कर देते हैं। उनकी यह उदारता उनकी हर यात्रा के विडियोज में देखी जा सकती है।

अजरबैजान में बहुसंख्यक आबादी इस्लाम धर्म को मानने वालों की है लेकिन वह एक धर्म निरपेक्ष देश है तथा वहां समाज का एक बड़ा वर्ग किसी धर्म का अनुयाई नहीं है। एकाध वीडियो में दावुद भी इसी बात को स्वीकारते दिखाई देते हैं। दावुद मनुष्यता को धर्म मानते हैं। सभी धर्मों, समुदायों का सम्मान उनके मन में है। सब जगह जाते हैं, सम्मान व्यक्त करते हैं और वीडियो में यह सब सहजता से देखा जा सकता है। अपनी उदारता से वे दर्शकों का मन जीत लेते हैं। किसी सांता क्लाज या देवदूत की तरह वे वृद्ध, बच्चों, कमजोर और जरूरतमंद के लिए अकस्मात देवदूत की तरह प्रकट हो जाते हैं।

दावुद ने भी यूट्यूब माध्यम में पूर्णतः ट्रवेलर ब्लॉगर के रूप में प्रवेश अपनी नौकरी छोड़कर किया है। वे सामान्यतः अच्छी होटलों में ठहरते हैं। कई बार उस जगह की सबसे लग्जरी होटल में रुकते हैं। वीडियो टूर देते हैं। नाश्ता, लंच, डिनर, स्विमिंग पूल, टेरेस, जिम आदि सभी पक्षों का आस्वाद अपने दर्शकों को कराते हैं। लेकिन यह केवल एक पक्ष है, बड़ा महत्वपूर्ण दूसरा पक्ष यह है कि वे सामान्य लोगों के बीच अपना अधिकांश समय सामान्य परिदृश्य में गहरे से उतरते जुड़ते हुए बिताते हैं।

ज्यादातर वे खाना बाजार में स्थानीय रेस्टोरेंट में करते हैं और उसमें भी स्ट्रीट फूड और छोटे छोटे स्टाल्स उनकी प्राथमिकता में होते हैं। बाजार में घूमते हुए जब देखते हैं कि

कोई बहुत अच्छा स्थानीय शरबत मिल रहा है तो वह अवश्य उसका आनंद उठाएंगे। ऐसे में उनके आसपास लोगों की भीड़ जुट जाती है तो दुकानदार से बोलते हैं कि इन सबको भी यह दे दीजिए, उसका पूरा पेमेंट वही कर देते हैं। किसी दुकानदार की कमजोर स्थिति देखकर वे भावुक भी हो जाते हैं, पूछते हैं, भाई आप दिन भर में कितना कमा लेते हैं? मान लीजिए वह व्यक्ति बता देता है कि मैं दिन भर में 500 रुपए कमा लेता हूं तो दाऊद उससे उसके स्टाल का पूरा सामान फ्री लोगों में वितरित करने का कह देते हैं, सब लोगों को आप मेरी तरफ से फ्री बांट दीजिए, और आप आज के लिए कुछ नहीं करें, आप घर जाकर आराम करें। यह दया भाव एक जरूरतमंद छोटे कारोबारी व्यक्ति के लिए देखकर बहुत अच्छा लगता है।

एक बार शायद कोलकाता या बांग्लादेश में कहीं घूम रहे थे। सब्जी मंडी में एक बूढ़ी महिला अपनी छोटी सी बास्केट में लहसुन रखकर सड़क किनारे बैठी थी। वे उससे स्नेहपूर्वक बातें करते हैं, खैरियत पूछते हैं, उसकी सारी लहसुन खरीद लेते हैं। वह लहसुन आगे जाकर उन्होंने और किसी गरीब जरूरतमंद परिवार को भेंट कर दी। लहसुन के पूरे दाम चुका के कुछ और राशि अतिरिक्त देकर उन्होंने कहा कि आज आप आगे काम नहीं करेंगे, आप घर जाइए आराम करिए।

दावुद अकुंदजादा की उदारतापूर्ण मार्मिक अनुभूतियों से गुजरना चाहते हैं तो उनकी श्रीलंका सीरीज के विडियोज को अवश्य देखा जाना चाहिए। स्कूटर से उनको ग्रामीण क्षेत्रों में घूमते, ग्रामीणों, खेत में काम करते मजदूरों से वार्तालाप करना, छोटे छोटे ग्रामीण स्टालों, टापरियों पर जाकर खाना पीना, आत्मीयता से सुख दुख की बातें करना फिर उन सबकी मदद करना। निर्धन परिवारों और बच्चों की संस्थाओं में जाकर उनसे मेल मुलाकात, सहयोग का हाथ बढ़ाना और आर्थिक सहयोग करना, बहुत अद्भुत और मानवीय संवेदनाओं का प्रेरक गुलदस्ता सा बन जाते हैं ट्रेवल ब्लॉगर दावुद अकुंजादा।

ट्रेवल वीडियो देखते हुए यदि ब्लॉगर की अनुभूतियां हमारी अनुभूति में रूपांतरित होकर संवेदनाओं और नैतिक मूल्यों का थोड़ा भी प्रस्फुटन करती हैं तो क्यों न हमें इनका भरपूर स्वागत और आभार व्यक्त करना चाहिए! साधुवाद दावुद!

अंतरिक्ष विज्ञान में भारत का बढ़ता वैश्विक नेतृत्व

राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

भारत की सभ्यता सदियों से ज्ञान, शोध और नवाचार की धरोहर रही है। वैदिक काल से लेकर आज तक हमारे वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने पूरी दुनिया को दिशा देने का कार्य किया है। जब प्राचीन भारत के ऋषि आकाशगंगा और ग्रहों-नक्षत्रों के रहस्यों को अपने ज्ञान से परिभाषित कर रहे थे, तब पश्चिमी सभ्यता उनके अस्तित्व तक से अपरिचित थी। आर्यभट्ट जैसे खगोलशास्त्री ने न केवल शून्य और दशमलव जैसी गणितीय अवधारणाओं से विश्व का मार्गदर्शन किया बल्कि यह भी सिद्ध कर दिया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है और सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है। यही वैज्ञानिक परंपरा आज भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अदम्य साहस और अथक परिश्रम के रूप में नई ऊंचाईयों को छू रही है। यही कारण है कि आज भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम केवल देश की तकनीकी क्षमता का ही प्रतीक नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत की निरंतरता का दर्पण भी है। 23 अगस्त 2023 का दिन तो भारत के लिए एक ऐसा गौरवपूर्ण अवसर लेकर आया, जिसने पूरे विश्व को हतप्रभ कर दिया। इसी दिन इसरो ने अपने महत्वाकांक्षी मिशन चंद्रयान-3 को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक उतारकर इतिहास रचा था। भारत की यह केवल एक वैज्ञानिक उपलब्धि नहीं थी बल्कि राष्ट्र की सामूहिक इच्छाशक्ति, वैज्ञानिकों की प्रतिभा और प्राचीन ज्ञान से उपजे उस आत्मविश्वास का परिणाम था, जिसने भारत को अंतरिक्ष विज्ञान में शीर्ष पंक्ति में खड़ा कर दिया। यह संयोग ही है कि चंद्रयान-3 की सफलता को अमर बनाने और देश की नई पीढ़ियों को प्रेरित करने के लिए 23 अगस्त को प्रतिवर्ष 'राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। इस वर्ष यह दिवस 'आर्यभट्ट से गगनयानः प्राचीन ज्ञान से अनंत संभावनाओं तक' की थीम के साथ मनाया जा रहा है, जो अतीत की उपलब्धियों और भविष्य की अनंत संभावनाओं का संगम है।

भारत की सभ्यता सदियों से ज्ञान, शोध और नवाचार की धरोहर रही है। वैदिक काल से लेकर आज तक हमारे वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने पूरी दुनिया को दिशा देने का कार्य किया है। जब प्राचीन भारत के ऋषि आकाशगंगा और ग्रहों-नक्षत्रों के रहस्यों को अपने ज्ञान से परिभाषित कर रहे थे, तब पश्चिमी सभ्यता उनके अस्तित्व तक से अपरिचित थी। आर्यभट्ट जैसे खगोलशास्त्री ने न केवल शून्य और दशमलव जैसी गणितीय अवधारणाओं से विश्व का मार्गदर्शन किया बल्कि यह भी सिद्ध कर दिया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है और सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है। यही वैज्ञानिक परंपरा आज भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अदम्य साहस और अथक परिश्रम के रूप में नई ऊंचाईयों को छू रही है। यही कारण है कि आज भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम केवल देश की तकनीकी क्षमता का ही प्रतीक नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत की निरंतरता का दर्पण भी है। 23 अगस्त 2023 का दिन तो भारत के लिए एक ऐसा गौरवपूर्ण अवसर लेकर आया, जिसने पूरे विश्व को हतप्रभ कर दिया। इसी दिन इसरो ने अपने महत्वाकांक्षी मिशन चंद्रयान-3 को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक उतारकर इतिहास रचा था। भारत की यह केवल एक वैज्ञानिक उपलब्धि नहीं थी बल्कि राष्ट्र की सामूहिक इच्छाशक्ति, वैज्ञानिकों की प्रतिभा और प्राचीन ज्ञान से उपजे उस आत्मविश्वास का परिणाम था, जिसने भारत को अंतरिक्ष विज्ञान में शीर्ष पंक्ति में खड़ा कर दिया। यह संयोग ही है कि चंद्रयान-3 की सफलता को अमर बनाने और देश की नई पीढ़ियों को प्रेरित करने के लिए 23 अगस्त को प्रतिवर्ष 'राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। इस वर्ष यह दिवस 'आर्यभट्ट से गगनयानः प्राचीन ज्ञान से अनंत संभावनाओं तक' की थीम के साथ मनाया जा रहा है, जो अतीत की उपलब्धियों और भविष्य की अनंत संभावनाओं का संगम है।

भारत की अंतरिक्ष यात्रा उतनी ही रोमांचक है, जितनी कठिन। जब 1947 में देश आजाद हुआ, तब हमारे पास न तो आधुनिक तकनीक थी, न संसाधन और न ही वैज्ञानिक आधारभूत संरचना लेकिन इसी धरती ने डॉ. विक्रम साराभाई, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम और सैंकड़ों वैज्ञानिकों को जन्म दिया, जिन्होंने सीमित साधनों में भी असीम सपनों को साकार करने का संकल्प लिया। इसरो की स्थापना के साथ ही अंतरिक्ष विज्ञान की नई सुबह हुई और भारत ने उस राह पर चलना शुरू किया, जिस पर कभी केवल अमेरिका और सोवियत संघ जैसे महाशक्ति राष्ट्र चलते थे। भारत के चंद्र मिशन इस यात्रा की सबसे चमकदार कड़ी हैं। 2008 में चंद्रयान-1 ने यह साबित कर दिया कि भारत केवल पृथ्वी की कक्षा तक सीमित रहने वाला देश नहीं बल्कि चंद्रमा के रहस्यों को सुलझाने वाला अग्रणी राष्ट्र है। यही वह मिशन था, जिसने पहली बार चंद्रमा पर पानी के अणुओं की उपस्थिति की पुष्टि कर वैश्विक वैज्ञानिक जगत को चौंका दिया। उसके बाद 2019 में भारत ने चंद्रयान-2 के साथ साहसिक कदम उठाया और चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव की ओर प्रस्थान किया। भले ही चंद्रयान-2 का लैंडर विक्रम सुरक्षित उतरने में असफल रहा लेकिन उसका ऑर्बिटर आज भी अमूल्य वैज्ञानिक जानकारी भेज रहा है। यही असफलता भविष्य की सफलता की नींव बनी और चंद्रयान-3 ने 23 अगस्त 2023 को वह कर दिखाया, जो किसी भी देश के लिए संभव नहीं हो सका था। भारत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला पहला राष्ट्र बना। चंद्रयान-3 की सफलता केवल तकनीकी दृष्टि से ही अद्वितीय नहीं थी बल्कि वह इसरो की लागत-प्रभावी रणनीति का भी उदाहरण बनी। जहां अन्य देशों को अरबों डॉलर खर्च करने पड़ते हैं, वहीं भारत ने यह इतिहास मात्र 615 करोड़ रुपये में रचा। यह उस वैज्ञानिक सोच का परिणाम है, जो सरलतम साधनों में भी श्रेष्ठतम परिणाम प्राप्त करने में विश्वास रखती है। इस मिशन का विक्रम लैंडर और प्रज्ञान रोवर आज भी चंद्रमा की सतह पर भारत की विजयगाथा सुनाते हैं।

भारत की यह यात्रा केवल चंद्रमा तक ही सीमित नहीं है। मंगलयान (मंगल ऑर्बिटर मिशन) ने 2014 में पूरे विश्व को चकित किया, जब भारत पहले ही प्रयास में मंगल की कक्षा में पहुंचने वाला पहला देश बन गया था। अब गगनयान मिशन मानव को अंतरिक्ष में ले जाने की तैयारी कर रहा है, जो भारत को अंतरिक्ष विज्ञान में और भी ऊंचाई पर पहुंचा देगा। यह सब कुछ हमें बार-बार यह स्मरण कराता है कि हमारे पूर्वजों का खगोल और गणित का ज्ञान आज भी हमारी राह रोशन कर रहा है। 'आर्यभट्ट से गगनयान' की यात्रा केवल एक वैज्ञानिक यात्रा नहीं है बल्कि यह भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना की यात्रा भी है। जब प्राचीन ऋषि यज्ञशाला में वेदों के मंत्रों के साथ ग्रह-नक्षत्रों की गति का अध्ययन कर रहे थे, तब वे आधुनिक विज्ञान की नींव रख रहे थे। आर्यभट्ट ने सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण की वैज्ञानिक व्याख्या दी। भास्कराचार्य ने समय, गति और ग्रहों के स्थान की अद्भुत गणना की। यही धारा आधुनिक भारत में इसरो की प्रयोगशालाओं और प्रक्षेपण स्थलों पर दिखाई देती है, जहां वैज्ञानिक गणितीय समीकरणों और तकनीकी उपकरणों से अंतरिक्ष के रहस्यों को सुलझा रहे हैं।

चंद्रयान-3 की सफलता से भारत अब केवल विज्ञान और तकनीक में ही नहीं, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता में भी विश्व का नेतृत्व कर रहा है। यह सफलता हमारे युवाओं के लिए प्रेरणा है कि वे विज्ञान और प्रौद्योगिकी को केवल नौकरी या कैरियर के रूप में न देखें बल्कि राष्ट्र निर्माण और मानवता की सेवा के अवसर के रूप में अपनाए। गगनयान से लेकर आदित्य-एल1, मंगलयान-2 से लेकर भविष्य के चंद्र मिशनों तक भारत की यह यात्रा अब थमने वाली नहीं। इसरो का हर कदम न केवल भारत को नई ऊंचाईयों तक ले जाएगा बल्कि पूरी मानवता के लिए नए आयाम खोलेगा। भारत की अंतरिक्ष गाथा आज भी लिखी जा रही है और आने वाले समय में यह गाथा और भी स्वर्णिम होगी। आर्यभट्ट से शुरू हुई यह यात्रा गगनयान तक पहुंचेगी है और आगे यह हमें उन अनंत संभावनाओं तक ले जाएगी, जिनकी कल्पना आज हम केवल स्वप्न में ही कर सकते हैं। यही भारत की शक्ति है, यही उसका आत्मविश्वास है और यही उसका भविष्य है।

बहरहाल, राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस भविष्य की संभावनाओं का उद्घोष है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि जब कोई राष्ट्र अपने सामूहिक संकल्प, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और अदम्य साहस से प्रेरित होता है तो वह किसी भी असंभव को संभव बना सकता है। आज जब भारत अपना दूसरा राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस मना रहा है, तो यह सदियों की साधना और आने वाले कल की संभावनाओं का प्रतीक है। यह आर्यभट्ट के प्राचीन ज्ञान और इसरो के आधुनिक विज्ञान का संगम है। यह वह धारा है, जो हमें बताती है कि ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती और अंतरिक्ष की अनंतता में मानव की जिज्ञासा ही उसकी सबसे बड़ी ताकत है।

गर्व से भरती है आशाराम की सफलता

प्रतिभा

प्रतिभा मिश्रा

सेवानिवृत्त प्राचार्य जवाहर नवोदय विद्यालय देवास

प्रायवेट स्कूलों में पढ़ा कर और इंग्लिश के नाम पर अधकचरा ज्ञान बच्चों में पाकर जहां मां बाप फख्र करते हैं वहीं गांव के सरकारी स्कूल में पढ़ा यह बालक भी बाद में प्रायवेट स्कूल में पढ़ा क्योंकि सरकारी स्कूल की हालत बहुत खराब थी। वहीं के शिक्षकों ने इसके पिता को इसकी प्रतिभा और तीव्र बुद्धि देखकर इंग्लिश की पढ़ाई का सोच कर प्रायवेट स्कूल में एडमिशन दिलाने को कहा। यही नहीं पिता की आर्थिक स्थिति फीस भरने की नहीं थी तो दो साल तक उन शिक्षकों ने जिनके नाम वो गर्व से लेता है कमल पाटीदार और ईश्वर पाटीदार ने सहायता की। इंग्लिश स्कूल में भी कई बार उसे कठिनाईयों से गुजरना पड़ा। मगर फिर नवोदय विद्यालय की परीक्षा पास कर वो यहां आया तो उसे राहत मिली। उसे दीक्षा फाउंडेशन जैसे एनजीओ से सहायता मिली।

आज मैं जिस आशाराम का आपको परिचय देने जा रही हूं वो जोधपुर के एम्स में डॉक्टर है। जवाहर नवोदय विद्यालय देवास में छठी कक्षा में प्रवेश लेने वाला ये विद्यार्थी एक दिन इतना नाम कमायेगा कभी कल्पना भी नहीं की थी। इसका श्रेय नवोदय विद्यालय को जाता है जहां गरीबों के बच्चों को छठी से बारहवीं तक की पढ़ाई निःशुल्क प्रदान की जाती है। साथ ही उनको आगे की जिंदगी के लिए मार्गदर्शन और अवसर भी मिलते हैं। जहां एक ओर स्कूल बंद करने की बात हो रही है वहीं नवोदय विद्यालय गरीब बच्चों को आज कहां से कहां पहुंचा देने में सफल रहे हैं। आशाराम उसी का एक उदाहरण है।

छोटे से गांव का यह बच्चा जिसके पिता के पास कोई रोजगार नहीं था। छुट-पुट काम करना, कभी खेतों में, कभी लोगों की बकरियां चराना, कभी छोटी मोटी वस्तुएं बेचना और यहां तक कि पन्नियां तक बीन कर अपने तीन बच्चों को पालना पढ़ाना, कितना कष्टप्रद रहा होगा इसकी कल्पना करना भी कठिन है। जहां आज कल बच्चे अपने पिता की छोटी मोटी नौकरी का परिचय कराने में झिझकते हैं वहीं आशाराम कभी यह कह कर शर्मिंदा नहीं होता था कि वो एक झोंपड़ी में रहकर बकरियां चराकर और आम बेचकर अपने परिवार की मदद करके आज इस मुकाम तक पहुंचा है।

प्रायवेट स्कूलों में पढ़ा कर और इंग्लिश के नाम पर अधकचरा ज्ञान बच्चों में पाकर जहां मां बाप फख्र करते हैं वहीं गांव के सरकारी स्कूल में पढ़ा यह बालक भी बाद में प्रायवेट स्कूल में पढ़ा क्योंकि सरकारी स्कूल की हालत बहुत खराब थी। वहीं के शिक्षकों ने इसके पिता को इसकी प्रतिभा और तीव्र बुद्धि देखकर इंग्लिश की पढ़ाई का सोच कर प्रायवेट स्कूल में एडमिशन दिलाने को कहा। यही नहीं पिता की आर्थिक स्थिति फीस भरने की नहीं थी तो दो साल तक उन शिक्षकों ने जिनके नाम वो गर्व से लेता है कमल पाटीदार और ईश्वर पाटीदार ने सहायता की। इंग्लिश स्कूल में भी कई बार उसे कठिनाईयों से गुजरना पड़ा। मगर फिर नवोदय विद्यालय की परीक्षा पास कर वो यहां आया तो उसे राहत मिली। उसे दीक्षा फाउंडेशन जैसे एनजीओ से सहायता मिली।

आशाराम को दसवीं कक्षा में नवोदय से उक्त परीक्षा देने का अवसर मिला जिसमें सात नवोदय के विद्यार्थियों ने भाग लिया था। उसमें सिर्फ आशाराम का सिलेक्शन हुए। फिर तो जैसे उसके लिए रास्ते खुलते चले गये। सबसे कठिन एम्स की परीक्षा जिसमें साढ़े चार लाख विद्यार्थीयों ने भाग लिया था उसमें 707 वीं रैंक लेकर पहली बार में सफल होकर ये साबित कर दिया कि मेहनत और कठिन परिश्रम से क्या हासिल नहीं किया जा सकता है। यही नहीं उसने नीट की परीक्षा पास की, जर्मन सिल्वर जोन फाउंडेशन संस्थान में चयन, रिसर्च साइंटिस्ट में चयन, किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन योजना में चयन और अंत में जोधपुर के एम्स में एमबीबीएस की पढ़ाई हेतु चयन।

ये कहानी है उस होनहार परिश्रमी छात्र आशाराम की जिसे इंग्लिश स्कूल में ताने सुनने पड़े, छुट्टियों में पिता का हाथ बंटाने में बकरियां चराई ताकि चालीस रुपए कमा सके। आम बेचे खेतों में काम किया। पिता को भी गांव के लोग व्यंग्य करते थे कि ये तो अपने लड़के को डॉक्टर बनाने के दिन में सपने देखता है। वही लड़का जब एम्स के लिए चयनित हुआ तो सबसे पहले राहुल गांधी की बधाई का पत्र मिला। तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने तत्काल देवास कलेक्टर को आर्थिक मदद करने के आदेश दिए और आशाराम को भोपाल अपने साथ चाय पर आमंत्रित किया। कलेक्टर देवास कार्यालय ने पच्चीस हजार रुपए का चैक प्रदान किया।

इस सबके बावजूद माता पिता ने यही कहा बेटा कभी भी ये मत भूलना कि तुम गरीबी से उठे हो। गरीबों की मदद करना। कोई लाचार हो तो फीस मत लेना। समझना तुम्हारी मां ने उसे भेजा है। आज जहां बाप के पैसों पर बच्चे ऐश करते समय में भूल जाते हैं कि कितना संघर्ष किया होगा उनकी परवरिश में मां बाप ने और उन्हीं मां बाप का बेटा कहलाने में शर्म महसूस करते हैं जो गरीबी में जीते रहे वहीं आशाराम जैसे बेटे अपने मां बाप पर गर्व करते हैं। उन्हें ये संकोच नहीं होता कि ये गरीब रहे और हमें आगे बढ़ाया। ये कहावत आशाराम जैसे बेटों पर सही सिद्ध होती है पूछ कपूत तो क्या धन संचय पूत सपूत तो का धन संचय। मैं गर्व महसूस करती हूं अपने इस छात्र पर जिसे पढ़ाने का नवोदय विद्यालय देवास में मुझे अवसर मिला।

ऑनलाईन मनी गेम्स पर रोक, निश्चित ही देश के लिए यह महत्वपूर्ण विधेयक

सेंधवा। देश के नौनिहालो को बर्बादी की ओर ले जाने वाले ऑनलाईन मनी गेम्स पर रोक लगाने वाले बिल को लोकसभा एवं राज्यसभा ने पारित कर दिया। निश्चित ही देश के लिए यह महत्वपुर्ण विधेयक पास हुआ है। जिसकी आम जनता मे व्यापक सकारात्मक प्रतिक्रिया हुई है।

यह विधेयक पारित होने पर सामाजिक कार्यकर्ता एवं अधिवक्ता बी.एल. जैन ने विशेष रूप से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र प्रेषित कर आभार व्यक्त किया है। श्री जैन ने पत्र मे लिखा है कि मेरे द्वारा दिसंबर 2021 से ही आपके कार्यालय को पत्र प्रेषित कर देश के नौनिहालो एवं युवा पीढ़ी के भविष्य को ध्यान मे रखते हुए ऑनलाईन गेमिंग पर प्रतिबंध लगाने अथवा इसके नियमन के लिए कानुनी प्रावधान लागू किए जाने की सतत् मांग की जा रही थी। आपने पत्र में लिखा की मेरे पत्रो के प्रत्युत्तर मे आपके कार्यालय से मुझे 24 अगस्त 2022 को एक पत्र प्रेषित कर अवगत कराया गया था कि ''सरकार भारत मे उपलब्ध ऐसे ऑनलाईन गेंमिंग, जुआ, सट्टेबाजी आदि की बढाती संख्या प्रासांगिक जोखिमो, उपयोगकर्ताओं को नुकसान, वित्तीय नुकसान, संभावित लत, कुछ राज्यों द्वारा ऑनलाईन स्पेस में कानूनों की एकरूपता सहित चुनौतियों से अवगत है। इस संबंध में सरकार इस उद्योग के नियमन के लिए एक संभावित रोडमेप विकसित करने की प्रक्रिया में है। इसके अलावा सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने ऑनलाईन गेमिंग और सट्टेबाजी के विज्ञापनों पर सलाह दी है जो कुछ सावधानियों का पालन करने पारदर्शिता का अभ्यास करने एवं उपभोक्ताओं की सुरक्षा निर्धारित करता है, परामर्श की प्रतियां सलंग्न प्रेषित है। इसके अलावा किसी विशिष्ट घटना के मामले को उपयुक्त कार्यवाही के लिए राष्ट्रीय सायबर अपराध रिपोर्टींग पोर्टल पर रिपोर्ट किया जा सकता है।'' श्री जैन बताया कि प्रधानमंत्री कार्यालय के पत्र प्राप्ति के बाद भी ठोस कार्यवाही प्रारंभ नही हुई तो उनके द्वारा 05 जून 2022 से प्रतिदिन प्रधानमंत्री कार्यालय को एक पत्र उनके कार्यालय से प्रेषित किया जाता था प्रतिदिन किसी जनप्रतिनिधी, सामाजिक कार्यकर्ता, शहर के नागरिक, विद्यार्थी, शिक्षको से हस्ताक्षर करवाकर सतत् ये पत्र प्रधानमंत्री कार्यालय को प्रेषित किए जा रहे थे। समय-समय पर पम्पलेट के माध्यम से जन-जागरण अभियान भी मेरे द्वारा चलाया जाता रहा है। इसके अलावा देश के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, केन्द्रीय गृहमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष, विभिन्न प्रदेशो के मुख्यमंत्री सांसदों एवं आरएसएस के सरसंघ चालक मोहन भागवत, गायत्री परिवार के मुखिया डॉ प्रणव पंडया, श्री श्री रविशंकर जी, ब्रह्माकुमारी दीदी सहित देश की अनेक जानीमानी हस्तियों को पत्र प्रेषित किए जाकर सरकार पर दबाव बनाने का अनुरोध किया गया साथ ही देश की सर्वोच्च अदालत के मुख्य न्यायाधिपति को भी ''पत्र याचिका'' विस्तृत रूप से तैयार कर प्रेषित की गई एवं अनेक मंचो के माध्यम से इस विषय को उठाया गया। श्री जैन ने कहा कि जब 20 अगस्त को लोकसभा मे यह बिल पारित हुआ तो उन्हे बेहद प्रसन्नता हुई। निश्चित ही देश के प्रधानमंत्री ने यह महत्वपूर्ण बिल कड़े नियमों के साथ जो बनाया है वह देश की युवापीढ़ी को बर्बादी की कगार पर जाने से सुरक्षित करेगा।

शहर में गणेश चतुर्थी की तैयारी शुरू, सजने लगे गणेश पंडाल

इस बार 20-30 फीसदी बढ़े गणेश प्रतिमाओं के दाम

बैतूल। प्रथम पूज्य भगवान गणेश का दस दिनी उत्सव 27 अगस्त से शुरू होगा। जिसे लेकर शहर में तैयारी शुरू है। मूर्तिकार प्रतिमाओं को आकार देने में जुटे हैं। मूर्तिकारों ने इस साल दो से नौ फुट तक की सबसे ज्यादा प्रतिमाएं तैयार की हैं क्योंकि इनकी सबसे ज्यादा मांग है। इस बार गणेश चतुर्थी 27 अगस्त को है। कलाकारों के अनुसार सहायक सामग्री के दाम में वृद्धि होने से प्रतिमा की कीमत 20-30 फीसदी बढ़ गई है। मूर्तिकार बताते हैं कि परिवार के साथ पिछले कई सालों से मूर्तियां बना रहे हैं। मांग के चलते तीन-चार महीने पहले ही काम शुरू कर देते है। गौरतलब रहे कि शहर में एक सैकड़ा से अधिक स्थानों पर गणेश प्रतिमाओं की स्थापना होती है। जहां गणेश पंडालों के निर्माण का कार्य भी गणेश उत्सव समितियों ने शुरू कर दिया है। कोठीबाजार, गंज क्षेत्र, सदर सहित अन्य सार्वजनिक स्थानों पर गणेश उत्सव समितियों द्वारा विशेष साज-सज्जा की जा रही है। वहीं घर-घर में उत्सव मनाने के लिए श्रद्धालु भी तैयारी में जुट गए हैं। गणेशोत्सव को लेकर युवाओं में खासा उत्साह भी बना हुआ है।

20 से 30 फीसदी बढ़े प्रतिमाओं के दाम

इस साल सामग्रियों के दाम बढने से प्रतिमाएं भी महंगी हुई है। मूर्तिकारों का कहना है कि प्रतिवर्ष प्रतिमा बनाने में उपयोग की जाने वाली सामग्री के दाम 10-

15 प्रतिशत बढ़ जाते है। इसलिए उन्हें मजबूरी में प्रतिमाओं को भी महंगी कीमतों में बेचना पडता हैं। इस साल मिट्टी, रंग, धान, भूसा, लकड़ी, बारदाना, ब्रश, गोंद सहित अन्य सामग्रियों के दामों में इजाफा हो गया हैं। प्लास्टर ऑफ पेरिस की मूर्तियों के बनाने पर प्रतिबंध है। ऐसे में मिट्टी की ही प्रतिमाएं बनाई जा रही हैं। इस बार मूर्ति बनाने के लिए पर्याप्त मात्रा में मिट्टी भी नहीं मिल पाई। ऊपर से रंग सहित अन्य सामग्रियों के भी दाम बढ़ गये है। जिससे प्रतिमाओं की कीमतों में बढ़ोत्तरी हुई है।

पीओपी की प्रतिमा बिक्री पर रहेगी नजर

पीओपी की प्रतिमाओं की बिक्री पर प्रतिबंध है। ऐसे में नगरपालिका भी सतर्क हो गई है। नगरपालिका द्वारा पीओपी की प्रतिमाएं न बिके इसके लिए टीम गठित की गई है, जो प्रतिमाओं की जांच करेगी। बता दे कि सरकार ने प्लास्टर ऑफ पेरिस (पीओपी) की मूर्तियां बनाने और बेचने पर प्रतिबंध लगा दिया है। कोई भी मूर्तिकार यदि इन मूर्तियों को बेचते पाया गया तो उनके खिलाफ कडी कार्रवाई की जाएगी। गणेशोत्सव नजदीक आते ही अब अधिकारियों की नजर भी मूर्तिकारों पर बनी हुई हैं। नगरपालिका के अधिकारी बाजारों में भी घुमकर प्रतिमाओं का चेक करेंगे और देखेंगे कि मूर्तियां मिट्टी की है या पीओपी से बनाई गई है। मूर्तिकारों ने पहले भी निर्देश दिए है कि खेत बनाने के लिए मिट्टी का उपयोग करें, अन्यथा कार्रवाई होगी।

माटी गणेश-सिद्ध गणेश अभियान चालू, दिया जा रहा प्रशिक्षण

मप्र जन अभियान परिषद द्वारा चलाए माटी गणेश-सिद्ध गणेश अभियान चलाया जा रहा है। इस अभियान के अंतर्गत मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद द्वारा मिट्टी से गणेश जी की इको-फ्रेंडली प्रतिमा बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जिसमें भगवान गणेश की मिट्टी से सुंदर और आसान प्रतिमाएं बनाने की प्रक्रिया सिखाई जा रही है। इस अभियान के तहत प्रतिभागियों को न केवल मिट्टी से गणेश प्रतिमा बनाने का प्रशिक्षण दिया गया, बल्कि उन्हें पर्यावरण संरक्षण के संदेश से भी जोड़ा गया। मध्य प्रदेश जन अभियान परिषद की जिला समन्वयक श्रीमती प्रिया चौधरी ने बताया की इस अभियान का मुख्य उद्देश्य है कि आगामी गणेशोत्सव में घर-घर मिट्टी के गणेश विराजें और विसर्जन भी पर्यावरण हितैषी ढंग से हो, जिससे परंपरा और प्रकृति दोनों का संरक्षण हो सके। इसके अलावा परिषद का प्रशिक्षित नेटवर्क गांव-गांव में लोगों को मिट्टी से गणेश जी की इको-फ्रेंडली प्रतिमा बनाने के लिए प्रेरित एवं प्रशिक्षित कर रहा है।

इनका कहना है -

पीओपी की मूर्ति न बिके, इसके लिए जांच की जा रही है। मूर्तिकारों को भी मिट्टी की प्रतिमाएं बनाने के लिए कहा गया है। वैसे ज्यादातर लोग बाहर से प्रतिमा खरीदकर लाते है और बेचते है। यदि कोई भी पीओपी की प्रतिमा बेचता पाया जाता है तो नियमानुसार कार्रवाही करेगे।

- ब्रजगोपाल परते,
वरिष्ठ राजस्व निरीक्षक, नगरपालिका बैतूल

भोपाल में पहली बार राजकीय सम्मान के साथ हुआ देहदान

स्व. श्रीमती रमा चौदा को उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने दी श्रद्धांजलि

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि देहदान सबसे बड़ा दान है। यह मानव जीवन को सेवा के माध्यम से अमर बना देता है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार ऐसे प्रेरणादायी कार्यों को सम्मान देने के लिए संकल्पित है। उन्होंने स्व. श्रीमती रमा चौदा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनका यह निर्णय आने वाली पीढ़ियों को चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान में अनुपम सहयोग देगा। उल्लेखनीय है कि भोपाल में पहली बार राजकीय सम्मान के साथ देहदान सम्पन्न हुआ। किरण फाउंडेशन के सहयोग से भोपाल निवासी स्व. श्रीमती रमा चौदा (आयु 79 वर्ष) जिनके पुत्र श्री राजेश गुप्ता नेशनल अस्पताल भोपाल के मेडिकल संचालक हैं, का देहदान गांधी मेडिकल कॉलेज भोपाल में कराया गया। इस अवसर पर राजकीय सम्मान के साथ पूरे विधि-विधान से देहदान प्रक्रिया सम्पन्न की गई। देहदान की इस पूरी प्रक्रिया में गांधी मेडिकल कॉलेज की डीन डॉ. कविता एन. सिंह और डॉ. संदीप जी ने आवश्यक सहयोग प्रदान किया। डीन डॉ. कविता सिंह ने कहा कि इस पहल से न केवल चिकित्सा शिक्षा को बल मिलेगा, बल्कि समाज में देहदान जैसे पुण्य कार्यों के प्रति जागरूकता भी बढ़ेगी।

आज धूमधाम से मनाया जाएगा पोला उत्सव

वर्षों से चली आ रही परंपरा, लगता है विशाल मेला

बैतूल। वर्तमान में पोला जैसा पर्व युवा पीढ़ी भूलती जा रही है। जिसे जिंदा रखने का जिम्मा कोल्हे परिवार ने विगत 108 वर्ष से सतत उठाया हुआ है। स्व.रतनलाल साहू (कोल्हे) की स्मृति में गंज में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी पोला उत्सव धूमधाम आज शनिवार धूमधाम से मनाया जाएगा। इस संबंध में समिति के नरेश चन्द्र साहू ने बताया कि सबसे अच्छी बैल जोड़ी, को एक विशेषज्ञ ट्रॉफी तंदुरुस्त जोड़ी पर एक विशेष ट्रॉफी और अच्छी सजावट के लिए 5 सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। शिवदयाल साहू और दीक्षांत साहू ने बताया कि तोरण एवं नंदी का पूजन शाम 6 बजे किया जाएगा। राजा साहू और पूरन साहू कार्यक्रम में प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल, शिक्षाविद मोहन नागर, नपा अध्यक्ष पार्वती बाई बारस्कर, मनीष सिंह ठाकुर, राजेंद्र किलेदार, अलकेश आर्य, राजीव खंडेलवाल, श्रीचन्द हिराणी, रहमान खान, विजय सिंह चौहान, दीपक सलूजा, आनंद प्रजापति, शंकर पेंद्राम, प्रवीण गुगनानी, भगवती अग्रवाल, दीपक कपूर को आमंत्रित किया गया है।

आजाद स्कूल अतिथि शिक्षक संघ की बैठक कल

बैतूल। जिले के समस्त अतिथि शिक्षकों को आजाद स्कूल अतिथि शिक्षक संघ की ओर से साधुवाद कल रविवार को कर्मचारी भवन में 12 बजे एक महत्वपूर्ण बैठक आहूत की गई है। जिसमें अनुभव आधारित अतिथि शिक्षकों की एक सूची जो लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा मांगी गई है को जमा कर सभी अतिथि शिक्षको के अनुभव प्रमाण पत्र जमा किए जाना है। जिसके लिए सभी अतिथि शिक्षकों की उपस्थिति अनिवार्य है। बैतूल ब्लॉक अध्यक्ष यमन जाधव ने बताया कि प्रांतीय आह्वान पर के सीपवार की अध्यक्षता में गुरु दक्षिणा का कार्यक्रम 5 सितंबर को भोपाल की धरा पर रखा गया है। जिसमें समस्त जिले एवं अन्य सभी जिले के अतिथि शिक्षक उपस्थिति होंगे। उपाध्यक्ष सौरभ लोहकरे ने बताया कि यह आंदोलन एक ऐतिहासिक आंदोलन बने अब हम अपने लक्ष्य के बहुत करीब है क्योंकि आपका संख्या बल हमें हमारे लक्ष्य के और करीब ले जाएगा

माटी गणेश-सिद्ध गणेश अभियान अंतर्गत कार्यशाला 23 अगस्त को

बैतूल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देशानुसार मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद द्वारा संचालित माटी गणेश-सिद्ध गणेश अभियान के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण एवं परंपराओं के संरक्षण की दिशा में एक विशेष पहल की जा रही है। इसी क्रम में बैतूल जिले में परिषद द्वारा मिट्टी से गणेश जी की इको-फ्रेंडली प्रतिमा बनाने का प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की जा रही है। यह कार्यशाला भारत भारती आवासीय प्राथमिक विद्यालय, जामठी में 23 अगस्त को दोपहर 12.30 बजे से प्रारंभ होगी। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्लास्टर ऑफ पेरिस की बजाय मिट्टी से भगवान गणेश की प्रतिमा बनाने हेतु प्रेरित करना है, जिससे प्रकृति और परंपरा दोनों का संरक्षण हो सके।

भौरा रेंज में बाघ के मूवमेंट से दहशत

सालीमेट गांव में दिखे पगमार्क, ग्रामीणों को किया अलर्ट

बैतूल। बैतूल के उत्तर वन मंडल की भौरा रेंज में टाइगर के मूवमेंट से ग्रामीणों में दहशत है। सतपुड़ा टाइगर रिजर्व से सटे गांव सालीमेट में चार दिन पहले टाइगर के फुट प्रिंट मिलने के बाद वन विभाग ने आसपास के ग्रामों में ग्रामीणों को सतर्क रहने की हिदायत दी है। उन्हें रात में आग जलाने और अनावश्यक रूप से न घूमने की सलाह देते हुए एहतियात बरतने को कहा गया है। ग्रामीणों के अनुसार ग्राम पंचायत सालीमेट के बोडीपानी गांव में टाइगर जंगली सुअरों का पीछा करते हुए मक्के के खेत तक पहुंच गया। किसान लक्ष्मीनारायण यादव और रामभरोसे यादव ने बताया कि खेत में अचानक

टाइगर को देख लोग भयभीत हो गए। गांव यादव बाहुल्य है और अधिकांश परिवार गाय-भैंस जैसे पशुधन पालते हैं, जो घरों के बाहर बंधे रहते हैं। ग्रामीण जगदीश यादव का कहना है कि ऐसे में पशुधन पर हमले का खतरा और बढ़ गया है। ग्रामवासी विजय उइके ने बताया कि इस बारे में वन विभाग को सूचना दी गई है। ग्रामीणों का आरोप है कि यदि जान-माल का नुकसान होता है तो इसकी जिम्मेदारी विभाग की होगी। वन विभाग के रेंजर बृजेश तिवारी ने बताया कि सालीमेट गांव जंगल से लगे हुए हैं और पास ही सतपुड़ा टाइगर रिजर्व है, इसलिए टाइगर का यहां आना स्वाभाविक है। जानकारी मिलते ही टीम को अलर्ट कर दिया गया है और कई जगहों पर पगमार्क भी मिले हैं। उन्होंने बताया कि गांवों में अनाउंसमेंट के जरिए लोगों को सतर्क किया जा रहा है। ग्रामीणों को खेतों में अकेले न जाने और पशुधन को सुरक्षित स्थानों पर बांधने की सलाह दी गई है। वन विभाग की टीम लगातार सर्चिंग कर रही है ताकि किसी तरह की जनहानि न हो।

सिंगल यूज पॉलीथिन के खिलाफ नपा ने चलाया अभियान

बैतूल। नगरपालिका टीम ने शुक्रवार को सिंगल यूज पॉलीथिन के खिलाफ अभियान चलाया। इस दौरान नपा टीम ने सिंगल यूज पॉलीथिन की जब्ती करने के साथ-साथ दुकानदारों पर जुर्माने की भी कार्रवाही की है। बताया जाता है कि नपा टीम ने गंज और कोठी बाजार क्षेत्र में 25 से 30 किलो सिंगल प्लास्टिक जप्त की गई और 16,700 का जुर्माना किया गया। नपा अधिकारी ने बताया कि यह कार्रवाही निरंतर जारी रहेगी।

'अभ्युदय' का समापन

सिनेमा की अधिकतर कहानियों में रामकथा की प्रेरणा : अनंत विजय

भोपाल। सिनेमा की विभिन्न विधाओं में लिखने वाले लेखक देश को देखने और समझने के बाद ही अलग-अलग विषयों का समावेश कहानियों में करते हैं। हमारे देश में कहानियों और उनके विषयों की कोई कमी नहीं है। समाज में अलग-अलग दौर में फिल्मों की कहानियां कैसे लिखी गई हैं, इसे पिछले अनेक दशकों की फिल्मों को देखकर समझा जा सकता है। यह विचार आज माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के अभ्युदय के अंतिम दिन रुस्तम तथा इकबाल जैसी चर्चित फिल्मों के पटकथा लेखक विपुल के. रावल ने व्यक्त की।

पटकथा लेखक रावल ने भारतीय फिल्म उद्योग और वैश्विक सिनेमा के विकास की यात्रा पर चर्चा करते हुए फिल्म लेखन के क्षेत्र में आ रहे महत्वपूर्ण बदलावों को रियल लाइफ से जुड़े विषयों की कहानियों के साथ प्रस्तुत करते हुए लेखन एवं तकनीक के अन्तरसम्बन्धों पर चर्चा की। सत्र में वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय ने कहा कि फिल्मों की कहानियां हमारी भावनाएं ही होती हैं। अगर हम गौर से देखेंगे तो पाएंगे कि सिनेमा की अधिकतर कहानियों में रामकथा की प्रेरणा होती है, क्योंकि रामकथा हमारे मन में रची-बसी है।

एक अन्य सत्र में नेटवर्क 18 के वरिष्ठ संपादक डॉ. बृजेश कुमार सिंह ने कहा कि आज डिजिटल मीडिया तेजी से बढ़ रहा है और इसने दूसरे माध्यमों को कड़ी प्रतिस्पर्धा दी है। उन्होंने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से घबराने की जरूरत नहीं है। डिजिटल का बाजार बहुत बढ़ेगा इसके साथ ओरिजिनल कंटेंट की मांग बढ़ेगी, अतःविद्यार्थी अपनी स्किल्स को बेहतर करने पर ध्यान दें।

इस सत्र के मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार बालकृष्ण ने मीडिया की विश्वसनीयता और ब्रॉडकास्टिंग पर अपने वक्तव्य में बताया कि किस तरह गलत सूचनाओं ने मीडिया में फैक्ट चैकिंग की मांग बढ़ाई है। उन्होंने कहा कि किस तरह डिजिटल फ्रॉड देश भर में बढ़ रहे हैं। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की पूर्व छात्रा एवं एनडीटीवी की एंकर अदिति राजपूत ने कहा कि मीडिया आज एक शक्तिशाली उपकरण है इसमें समाज को परिवर्तन करने की शक्ति है पर निश्चित तौर पर इसके कुछ उत्तरदायित्व भी हैं।

सेंसर टेक्नालॉजी पर अपनी बात रखते हुए ड्रोन टेक्नालाजी विशेषज्ञ चिराग जैन ने कहा कि मीडिया क्षेत्र से जुड़ी तकनीक का बेहद विकास हुआ है। इस क्षेत्र में काफी संभावनाएं हैं। उन्होंने अपने स्टॉर्टअप से जुड़े अनुभवों को भी साझा किया। इस सत्र में उपस्थित अधिवक्ता शिखा छिब्बर ने भारतीय न्याय संहिता के नवीन पहलुओं पर अपना संबोधन दिया। विश्वविद्यालय की पूर्व छात्रा और वर्तमान में कालिंदी कॉलेज, नई दिल्ली की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. निधि अरोड़ा ने विश्वविद्यालय से जुड़े अपने अनुभव साझा किए। सिनेमा अध्ययन विभाग की पूर्व छात्रा और फिल्मकार सरिता चौरसिया ने फिल्म की दुनिया में कॅरियर कैसे शुरू करना और विश्वविद्यालय से जुड़े अपने अनुभवों पर अपने विचार रखे।समापन सत्र में मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष अशोक पांडे ने कहा कि अधिकार एवं कर्तव्य एक साथ होते हैं, सत्य को समाज के सामने बिना किसी रंग के रखना पत्रकारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। समाज के धर्म का पालन करना पत्रकारों का उत्तरदायित्व है इस अवसर पर कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने कहा कि सत्रारंभ में आए विशेषज्ञों के दिए गुरु मंत्र विद्यार्थियों के लिए जीवन भर काम आने वाले हैं। सत्रारंभ के तीसरे दिन सिनेमा अध्ययन विभाग के सत्र के दौरान वर्ष 2025 में फिल्म प्रोडक्शन के स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी उत्सव ठाकुर को स्व. श्री अनिल चौबे स्मृति पदक एवं 21000 रुपये की राशि प्रदान की गई।

आदि कर्मयोगी अभियान से जिले के 554 जनजातीय बाहुल्य ग्रामों की बदलेगी तस्वीर

● कलेक्टर ने प्रेस वार्ता में पत्रकारों को अभियान की दी जानकारी

बैतूल। भारत सरकार जनजातीय कार्य मंत्रालय के निर्देशानुसार जिले में प्रारंभ किए गए आदि कर्मयोगी अभियान को लेकर शुक्रवार को कलेक्ट्रेट सभागार में प्रेस वार्ता आयोजित की गई। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि जिले के जनजातीय बाहुल्य ग्रामों में सुशासन का प्रभावी सिस्टम लागू करने, इन क्षेत्रों में योजनाओं की सेचुरेशन, विकास कार्यों की जन आधारित प्लानिंग और समस्याओं का स्थानीय स्तर पर ही निराकरण किए जाने के लिए केंद्र सरकार द्वारा आदि कर्मयोगी अभियान शुरू किया गया है। जनजातीय क्षेत्रों में जनहितैषी योजनाओं और विकास कार्यों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए आदि कर्मयोगी अभियान केंद्र सरकार की अभिनव पहल है। इस अभियान से जिले के 554 जनजातीय बाहुल्य ग्रामों की तस्वीर बदलेगी। इस अभियान में राष्ट्रीय मिशन विशेष रूप से पीएम जन मन और धरती आबा योजना के माध्यम से जमीनी स्तर पर जनजातीय वर्ग में आमूलचूल परिवर्तन आएगा।

जिले के ग्रामों में आदि सेवा केंद्र होंगे स्थापित- कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने बताया कि आदि कर्मयोगी, आदि सहयोगी तथा आदि साथी के माध्यम से अभियान क्रियान्वित होगा। जिले के विभिन्न विकास संबंधी विभागों के जिला, ब्लॉक एवं पंचायत स्तरीय कर्मचारी आदि कर्मयोगी होंगे। इसी प्रकार ग्रामों के स्थानीय अध्यापक, चिकित्सक एवं युवा आदि सहयोगी कहलाएंगे जिनका चयन ग्रामीणों द्वारा किया जाएगा। इसी प्रकार क्षेत्रीय स्व सहायता समूह की महिलाएं जनजातीय वर्ग के बुजुर्ग एवं वालंटियर का आदि साथी के रूप में चयन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि आदि कर्मयोगी अभियान के तहत 15 नवंबर 2025 तक जनजातीय बाहुल्य ग्रामों में योजनाओं

जिला स्तरीय मास्टर ट्रेनर 25 से 28 अगस्त तक देंगे प्रशिक्षण

का शत प्रतिशत सेचुरेशन, ग्रामीण स्तरीय विजन प्लान-2030 का निर्माण, योजनाओं की जानकारी एवं समस्याओं के त्वरित निराकरण के लिए आदि सेवा केन्द्र की स्थापना एवं इन क्षेत्रों में एक घंटे की साप्ताहिक जनसुनवाई किए जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उन्होंने बताया कि अभियान के क्रियान्वयन के लिए जिला स्तरीय नोडल अधिकारी सीईओ जिला पंचायत होंगे एवं समस्त सीईओ जनपद ब्लॉक स्तरीय नोडल अधिकारी रहेंगे एवं ग्राम पंचायत स्तर पर सचिव को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है।

प्रति सप्ताह अभियान की होगी नियमित समीक्षा: सीईओ - मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अक्षत जैन ने बताया कि जिला स्तर पर अभियान के क्रियान्वयन के लिए 7 जिला स्तरीय एवं प्रत्येक विकासखंड में 5 मास्टर ट्रेनर्स का चयन किया गया है। इसके अलावा अभियान में गैर सरकारी संगठन भी शामिल रहेंगे, जो फील्ड पर काम करेंगे। उन्होंने बताया कि जिला स्तरीय मास्टर ट्रेनर्स द्वारा राज्य स्तर पर आयोजित प्रशिक्षण में प्रशिक्षण प्राप्त किया गया है। उक्त मास्टर ट्रेनरों द्वारा 25 अगस्त से 28 अगस्त तक ब्लॉक स्तरीय मास्टर ट्रेनरों को प्रशिक्षित किया जाएगा। इसके बाद ब्लॉक स्तरीय मास्टर ट्रेनर अपने अधीनस्थ को ट्रेनिंग देंगे। प्रशिक्षण के पश्चात दल में शामिल सहयोगी और साथी विभिन्न ग्रामों का भ्रमण कर ग्राम में विकास की प्लानिंग बनाएंगे। उन्होंने बताया कि 15 नवंबर जनजातीय गौरव दिवस तक अभियान में शत प्रतिशत उपलब्धि हासिल की जाएगी। उन्होंने कहा कि अभियान अंतर्गत ट्रेनिंग के उपरांत जिला स्तर पर प्रति सप्ताह अभियान की नियमित समीक्षा की जाएगी।

जनजातीय परिवारों को विभिन्न योजनाओं से किया जाएगा लाभान्वित

आदि कर्मयोगी अभियान के तहत बैतूल जिले के 554 गांवों को शामिल किया गया है। जिनमें जनपद पंचायत भीमपुर के 109 ग्राम, भैंसदेही के 71 ग्राम, आठनेर के 51 ग्राम, बैतूल के 62 ग्राम, चिचोली के 42, घोड़ाडोंगरी के 86, शाहपुर के 66 ग्राम, मुलताई 9 ग्राम, प्रभात पट्टन के 26 ग्राम एवं आमला के 32 ग्राम सम्मिलित है। योजना का उद्देश्य चयनित जनजातीय बाहुल्य ग्रामों में जनजातीय परिवारों के लिए 18 विभागों मंत्रालयों की 25 योजनाओं मकान, सडक़, पेयजल, होमस्टे, विपणन केंद्र, उज्ज्वला योजना, मोबाइल, मेडिकल यूनिट, आंगनबाड़ी, पोषण वाटिका, आयुष्मान कार्ड, आधार कार्ड, छात्रावास, बिजली एवं सोलर कनेक्शन, 4जी मोबाइल कनेक्टिविटी, राशन कार्ड, पीएम जनधन योजना, सुकन्या समृद्धि योजना, जाति प्रमाण-पत्र, पीएम किसान कार्ड से शत-प्रतिशत संतृप्ति की जाकर जनजातीय समुदायों की सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार लाना है। कार्य के सफल क्रियान्वयन के लिए चयनित ग्रामों की, बसाहटों में व्यक्ति हितग्राही मूलक एवं अधोसंरचना संबंधी सर्वे के लिए ग्रामवार पंचायत सचिव, पीसीओ, रोजगार सहायक, उपयंत्री, शिक्षक, पटवारी, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, ग्राम सर्वे दल का गठन जिला स्तर से किया गया है।

मुख्यमंत्री ने प्रदेश के खिलाड़ियों की उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त की

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कश्मीर की प्रतिष्ठित डल झील में आयोजित देश के पहले खेलो इंडिया जल-खेल महोत्सव के पहले दिन प्रदेश के खिलाड़ियों द्वारा तीन मैडल जीतने पर प्रसन्नता व्यक्त की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कयाकिंग-केनोइंग की पृथक-पृथक श्रेणियों में रजत पदक जीतने वाले कृष्ण जाट, कांस्य पदक जीतने वाले मयंक और मासूमा यादव को बधाई दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने तीन दिवसीय महोत्सव की आगामी प्रतियोगिताओं के लिए खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि प्रदेश के खिलाड़ी जल-खेल महोत्सव में पदक जीतने का कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

मुख्यमंत्री ने शूटिंग चैंपियनशिप में प्रदेश के पदक विजेताओं को बधाई दी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कजाकिस्तान में जारी 16वीं एशियाई शूटिंग शॉटगन चैंपियनशिप में प्रदेश के खिलाड़ियों द्वारा स्वर्ण और कांस्य पदक जीतने पर प्रदेश के विजेता खिलाड़ियों को बधाई दी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मानसी रघुवंशी और ज्योरादित्य सिंह ने वैश्विक मंच पर देश और प्रदेश को गौरवान्वित किया है।

एशियाई शूटिंग शॉटगन चैंपियनशिप के अंतर्गत जूनियर महिला वर्ग में मानसी रघुवंशी ने स्वर्ण पदक और ज्योतिरादित्य सिंह सिसोदिया ने जूनियर पुरुष वर्ग में कांस्य पदक जीते। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि कठिन परिश्रम, अटूट समर्पण और एकनिष्ठ ध्येय के पर्याय प्रदेश के खिलाड़ियों की यह उपलब्धि असंख्य युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दोनों खिलाड़ियों को बधाई दी तथा उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बैतूल जंगल सत्याग्रह के जनजातीय नायकों को दी श्रद्धांजलि

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बैतूल में हुए जंगल सत्याग्रह के जनजातीय गौरव एवं महान क्रांतिकारी कोवा गोंड एवं बूचा कोरकू के बलिदान दिवस पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वर्ष 1930 में आज ही के दिन बैतूल में ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध जनजातीय नायक श्रद्धेय गंजन सिंह कोरकू के नेतृत्व में जंगल सत्याग्रह आरंभ हुआ था, जिसने अंग्रेजों को पीछे हटने को मजबूर कर दिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जनजातीय समुदाय के अधिकारों के संरक्षण और अन्याय के विरुद्ध यह सत्याग्रह सदैव मातृभूमि के प्रति समर्पण भाव से कार्य करने के लिए प्रेरित करता रहेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने व्यंग्यकार श्री हरिशंकर परसाई का किया स्मरण

भोपाल(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने साहित्य की व्यंग्य विधा के माध्यम से समाज की विसंगतियों पर गहरी चोट करने वाले प्रख्यात साहित्यकार श्री हरिशंकर परसाई की जयंती पर उनका स्मरण किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि परसाई जी की 'भोलाराम का जीव' और 'सदाचार का ताबीज' जैसी कालजयी रचनाएं सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्यों का मार्ग प्रशस्त करती रहेंगी।

छतरपुर में 10वीं के छात्र ने की आत्महत्या

छतरपुर (नप्र)। छतरपुर के गहरवार गांव में दसवीं कक्षा के छात्र ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतक की पहचान सतीश कुशवाहा (17) के रूप में हुई है। घटना शुक्रवार सुबह की है। सतीश रोज की तरह सुबह साढ़े 8 बजे ईसानगर में कोचिंग से पढ़कर घर लौटा। घर आने के बाद वो अपने कमरे में चला गया। करीब 10 बजे तक जब वह बाहर नहीं आया, तो परिजन खाना खाने के लिए बुलाने गए। कमरे में देखा तो वो पाइप से रस्सी के सहारे लटका हुआ था। परिजन तुरंत एंबुलेंस से उसे जिला अस्पताल ले गए। वहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। अस्पताल चौकी ने पंचनामा बनाकर शव को पोस्टमार्ट्म के लिए भेज दिया है।

आत्महत्या का कारण अभी पता नहीं- मृतक के चाचा प्रकाश, जो पन्ना की खदान में काम करते हैं, को सुबह भतीजे की तबीयत खराब होने की सूचना मिली थी। उन्होंने कहा कि आत्महत्या का कारण अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

इंदौर-उज्जैन मेट्रो 10 हजार करोड़ में चलेगी, 11 स्टेशन बनेंगे

डीएमआरसी ने दिया प्रेजेंटेशन, सीएम करेंगे रिव्यू फिर कैबिनेट में रखेंगे

भोपाल (नप्र)। इंदौर से उज्जैन तक 45 किलोमीटर तक मेट्रो दौड़ेगी। इसकी डीपीआर (डिटेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट) तैयार हो गई है। जल्द ही सीएम डॉ. मोहन यादव रिव्यू करेंगे। इसके बाद कैबिनेट बैठक में रखा जाएगा। हालांकि, फंड और डिपो के लिए सरकारी जमीन जैसी कुछ अड़चनें हैं। जिससे प्रोजेक्ट ने रफ्तार नहीं पकड़ी है।

दिल्ली मेट्रो ने दोनों शहरों की फिजिबिलिटी स्टडी रिपोर्ट तैयार की थी, जिसमें इसे मेट्रो के लिए अच्छा बताया था। इसके बाद डीपीआर तैयार की गई। इस प्रोजेक्ट में करीब 10 हजार करोड़ रुपए खर्च होने का अनुमान है। वहीं, लगभग 45 किमी के ट्रैक में 11 स्टेशन बनेंगे। 4.5 किमी का ट्रैक उज्जैन शहर में अंडर ग्राउंड रखने का प्रस्ताव है। मेट्रो लवकुश नगर से शुरू होकर उज्जैन रेलवे स्टेशन तक जाएगी।

पौन घंटे में सफर पूरा होगा

मेट्रो चलने से इंदौर-उज्जैन के बीच सफर में समय कम लगेगा और महाकाल मंदिर तक पहुंचने में दर्शनार्थियों को आसानी होगी। उज्जैन पहुंचने का समय लगभग आधा रह जाएगा। अभी बस से करीब 2 घंटे तो कार से करीब डेढ़ घंटा लगता है। दोपहिया से लगभग दो घंटे लगते हैं। मेट्रो 45 से 50 मिनट में लवकुश चौराहा से उज्जैन पहुंचेगी।

सांवेर के पास रेवती में मांगी जमीन

इंदौर में पहले से मेट्रो का संचालन हो रहा है, इसलिए दूसरे डिपो की जरूरत नहीं होगी। इंदौर के लवकुश चौराहे से उज्जैन तक मेट्रो पहुंचेगी। उज्जैन में डिपो के लिए जमीन तलाश की गई। कुल 49.7 एकड़ सरकारी जमीन उज्जैन के आसपास नहीं मिली। इस वजह से सांवेर के पास रेवती में जमीन मांगी गई। देश में कई शहरों में मेट्रो और रैपिड रेल चल रही हैं। दिल्ली मेट्रो सबसे बड़ी प्रणाली है और इसके अलावा रैपिड रेल दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ कॉरिडोर पर भी चल रही है। रैपिड रेल गुरुग्राम में भी उपलब्ध है।

यह 11 स्टेशन बनेंगे

डीपीआर में भौंरासला, बारोली, धरमपुरी, तराना, सांवेर, पंथ पिपलई, निनोरा, त्रिवेणी घाट, नानाखेड़ा, उज्जैन आईएसबीटी, उज्जैन रेलवे स्टेशन पर मेट्रो स्टेशन बनेंगे। उज्जैन में मेट्रो को कहां से अंडरग्राउंड किया जाना है, इस पर निर्णय होना है।

इंदौर में मेट्रो पहले से है, दूसरे डिपो की जरूरत नहीं

इंदौर-उज्जैन के बीच प्रस्तावित मेट्रो के लिए दिल्ली मेट्रो ने फिजिबिलिटी स्टडी की। इसके बाद डीपीआर का ड्रॉफ्ट बनाया गया। इसमें लागत, स्टेशनों की संख्या तय की गई है। इस प्रोजेक्ट में स्टेशनों की संख्या कम रहेगी। इंदौर-उज्जैन के बीच सड़क मार्ग की दूरी करीब 55 किमी है। इसके आसपास से ही मेट्रो गुजर सकती है। यह रोड पहले से ही सिक्स लेन किया जा रहा है। वहीं, यहां पर ज्यादा भू-अर्जन भी नहीं करना पड़ेगा।

दिल्ली मेट्रो ने ही की थी फिजिबिलिटी स्टडी

इंदौर-उज्जैन के बीच मेट्रो चलाने के लिए साल 2022-23 में फिजिबिलिटी स्टडी दिल्ली मेट्रो ने ही की थी, जो सरकार को सौंपी गई थी। इस रिपोर्ट के बाद सीएम डॉ. मोहन यादव ने इंदौर में बतौर प्रभारी मंत्री बैठक ली। इसमें कहा था कि मेट्रोपोलिटन सिटी में दोनों शहरों की फिजिबिलिटी रिपोर्ट सबसे बेहतर है। इसके बाद प्रोजेक्ट को लेकर रफ्तार तेज तो हुई, लेकिन फंड को लेकर अड़चन है। मेट्रो से जुड़े एक अफसर ने बताया कि इस प्रोजेक्ट को पूरा होने में कम से कम 3 साल लगेंगे। ऐसे में यह सिंहस्थ से पहले शुरू नहीं हो सकता।

स्टेशन कम रहेंगे तो लागत भी कम आएगी

भोपाल में प्रायोरिटी कॉरिडोर के सुभाष नगर से एम्स के बीच कुल 8 मेट्रो स्टेशन बन रहे हैं। एक स्टेशन की लागत 50 करोड़ रुपए से अधिक है। दूसरी ओर, इंदौर और उज्जैन के बीच मेट्रो के कम स्टेशन रहेंगे। इससे राशि बचेगी और लागत भी कम आएगी।

एलिवेटेड और अंडरग्राउंड रहेगी मेट्रो

मेट्रो कार्पोरेशन सूत्रों के अनुसार इंदौर-उज्जैन रोड पर मेट्रो को एलिवेटेड रखा जाएगा। इसके लिए सड़क के बीच स्थित डिवाइडर पर मेट्रो के पिलर खड़े किए जाएंगे। वहीं, नानाखेड़ा से उज्जैन रेलवे स्टेशन तक मेट्रो अंडर ग्राउंड रहेगी। हालांकि कितने किमी का कितना हिस्सा एलिवेटेड रहेगा और कितना अंडरग्राउंड रहेगा, यह डीपीआर तैयार होने के बाद ही पता चलेगा।

135 किमी अधिकतम रफ्तार

इंदौर व उज्जैन के बीच हाइब्रिड मोड में मेट्रो का संचालन किया जा सकता है। इसकी अधिकतम रफ्तार 135 किलोमीटर प्रतिघंटा तक रहेगी। वर्तमान में दिल्ली एयरपोर्ट एक्सप्रेस लाइन में इस तरह हाइब्रिड मोड में मेट्रो का संचालन किया जा रहा है। पूर्व में सिंहस्थ के पहले इंदौर से उज्जैन के बीच मेट्रो चलाने की योजना बनाई जा रही थी, लेकिन 10 हजार करोड़ रुपए का बजट जुटाना राज्य शासन के लिए आसान नहीं है। यही वजह है कि यह प्रोजेक्ट सिंहस्थ के पहले पूरा नहीं हो पाएगा।

एक तिहाई रह जाएगा ट्रैफिक

इंदौर और उज्जैन का करीब 75 प्रतिशत ट्रैफिक सड़क मार्ग से ही आना-जाना करता है। हजारों लोग इंदौर-उज्जैन में अप-डाउन करते हैं। इससे सड़क पर ट्रैफिक का दबाव बना रहता है। कई बार हादसे भी हो चुके हैं। ऐसे में इंदौर और उज्जैन के बीच मेट्रो बेहतर कनेक्टिविटी का बड़ा विकल्प हो सकता है। दोनों शहरों के बीच मेट्रो चलने के बाद सड़क मार्ग का ट्रैफिक एक तिहाई रह जाएगा।

श्योपुर में नाले में बहे दो युवक, एक को बचाया

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में बारिश का दौर जारी है। शुक्रवार को भोपाल, राजगढ़, शाजापुर, नर्मदापुरम के इटारसी, श्योपुर, मंडला और सिवनी-मालवा समेत कई जिलों में पानी गिरा है।

नर्मदापुरम में तवा डैम का एक गेट 3 फीट तक खोलकर पानी छोड़ा जा रहा है। श्योपुर में सीप नदी के उफान पर आने से निचली बस्तियों में पानी भर गया। बोदल की पुलिया बहने से सवाई माधोपुर रोड बंद हो गया है। श्योपुर के कराहल में दो युवक नाले में बह गए। एक को ग्रामीणों ने बचा लिया जबकि दूसरे की तलाश एसडीईआरएफ कर रही है।

मौसम विभाग ने शुक्रवार के लिए श्योपुर, नीमच और मंदसौर में अति भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। ग्वालियर, मुरैना, भिंड, दतिया, निवाड़ी, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, राजगढ़, रतलाम, आगर-मालवा, अनूपपुर, डिंडौरी, मंडला और बालाघाट में भारी बारिश का यलो अलर्ट है।

श्योपुर में सबसे ज्यादा 3.2 इंच पानी गिरा- पिछले 24 घंटे के दौरान श्योपुर में सबसे ज्यादा 3.2 इंच पानी गिर गया। गुना में 1.7 इंच, रतलाम में 1.5 इंच, शिवपुरी में 1.3 इंच, भोपाल में 1.2 इंच, रायसेन में 1.1 इंच और पचमढ़ी में 1 इंच बारिश हुई।

मंदसौर में उफान पर शिवना नदी- मंदसौर में शिवना नदी उफान पर है। इससे पशुपतिनाथ मंदिर की छोटी पुलिया जलमग्न हो गई है। दरअसल, सीमावर्ती राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले में हो रही बारिश से शिवना नदी का जलस्तर बढ़ा है। कालाभाटा डैम के गेट खोले जाने से शिवना उफान पर आ गई है।

इटारसी में भी झमाझम बारिश- इटारसी में शुक्रवार दोपहर को जमकर बारिश होने लगी। इससे लोगों को गर्मी और उमस से राहत मिली है। साथ ही मौसम भी सुहावना हो गया है।

सिवनी मालवा में तेज बारिश- सिवनी मालवा में शुक्रवार सुबह मौसम खुला हुआ था। दोपहर बाद से बारिश दौर शुरू हो गया। रुक-रुक कभी तेज बौछारें तो कभी रिमझिम फुहारें आ रही है।

भोपाल विधायक आरिफ मसूद पर एसआईटी जांच पर स्टे

सुप्रीम कोर्ट ने इंदिरा प्रियदर्शिनी कॉलेज के मामले में दी राहत ; हाईकोर्ट ने दिए थे आदेश

भोपाल (नप्र)। भोपाल की मध्य सीट से कांग्रेस विधायक आरिफ मसूद को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। सोमवार को मप्र हाईकोर्ट जबलपुर ने विधायक मसूद के इंदिरा प्रियदर्शिनी कॉलेज के मामले में एफआईआर दर्ज करने और एसआईटी जांच के आदेश दिए थे। इस मामले में विधायक सुप्रीम कोर्ट पहुंचे थे।

सिब्बल और तन्खा ने रखा मसूद का पक्ष

सुप्रीम कोर्ट में आज शुक्रवार को जस्टिस जेके माहेश्वरी की बैंच में विधायक मसूद की याचिका पर सुनवाई हुई। कांग्रेस विधायक की ओर से सुप्रीम कोर्ट में सीनियर एडवोकेट कपिल सिब्बल और विवेक तन्खा, वरुण तन्खा ने पक्ष रखा। मसूद के वकील विवेक तन्खा ने बताया कि हाईकोर्ट के आदेश को सुप्रीम कोर्ट ने स्टे कर दिया है।

एमपी हाईकोर्ट ने कहा था- 3 दिन के अंदर एफआईआर दर्ज करें

सोमवार को हाईकोर्ट ने फर्जी दस्तावेजों के जरिए कॉलेज की मान्यता प्राप्त करने के मामले में सुनवाई करते हुए एफआईआर दर्ज करने के निर्देश दिए थे। कोर्ट ने भोपाल कमिश्नर को आदेश दिया कि वे तीन दिन के भीतर एफआईआर दर्ज कर इसकी जानकारी कोर्ट को दें।

हाईकोर्ट के आदेश के बाद भोपाल के कोहेफिजा थाने में कांग्रेस विधायक आरिफ मसूद के खिलाफ कूटरचित दस्तावेजों के जरिए धोखाधड़ी करने का केस दर्ज किया गया। आरोप है कि उन्होंने फर्जी दस्तावेजों के आधार पर अपने कॉलेज को मान्यता दिलवाई।

जस्टिस अतुल श्रीधरन की कोर्ट में हुई सुनवाई के दौरान यह पाया गया कि कांग्रेस विधायक आरिफ मसूद ने फर्जी दस्तावेजों के माध्यम से कॉलेज की मान्यता ली थी। कोर्ट ने इंदिरा प्रियदर्शिनी कॉलेज में नए दाखिलों पर पूरी तरह से रोक लगा दी है।

भोपाल का सुल्तानिया हॉस्पिटल बिना एसी ठंडा रहेगा

एमपी का ऐसा पहला मल्टी स्पेशलिटी सरकारी अस्पताल, ओटी में रोबोट काम कर सकेंगे

भोपाल (नप्र)। भोपाल का 135 साल पुराना सरकारी सुल्तानिया अस्पताल जल्द हाईटेक और मॉडर्न रूप में बनकर तैयार हो जाएगा। इसकी बिल्डिंग इस तरह बनाई जा रही है, जिसमें दिन में लाइट जलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। कंस्ट्रक्शन कंपनी का दावा है कि इसके तीन फ्लोर में एयर कंडीशनर (एसी) की जरूरत भी नहीं पड़ेगी। हालांकि, आईसीयू और सेंसेटिव एरिया समेत नीचे के दो फ्लोर में जरूरत के लिहाज से एसी लगाए जाएंगे।

अंग्रेजी के आई अक्षर के शेप में बन रही इस बिल्डिंग के ज्यादातर हिस्से में प्राकृतिक रोशनी सीधे जाएगी। छत पर सोलर पैनल लगेंगे। इलेक्ट्रिक व्हीकल के लिए पार्किंग में चार्जिंग स्टेशन बनाए जाएंगे। इस सुपर स्पेशिलिटी हॉस्पिटल का निर्माण कार्य 136 करोड़ की लागत से अगस्त 2026 तक पूरा हो जाएगा।

स्वास्थ्य सुविधाओं के मामले में ये जिले का पहला ऐसा अस्पताल होगा, जहां ऑपरेशन थिएटर (ओटी) में रोबोटिक सर्जरी होगी। मिनिमल इनवेसिव प्रोसीजर और

स्मार्ट मॉनिटरिंग जैसी सुविधाएं पहली बार किसी सरकारी सेटअप में एक ही छत के नीचे मिलेंगी।

ओपीडी, आईपीडी और इमरजेंसी अलग-अलग ब्लॉक में रहेंगे- अस्पताल में ओपीडी, आईपीडी और इमरजेंसी के अलग-अलग ब्लॉक बनाए गए हैं, जिससे गंभीर मरीज, भर्ती मरीज और सिर्फ ओपीडी में दिखाकर लौट जाने वाले मरीज एक-दूसरे से अलग रहेंगे। गंभीर और भर्ती मरीज ओपीडी की भीड़ से बच सकेंगे। इनकी जांच और बिलिंग भी अलग-अलग होगी।

जिला स्वास्थ्य विभाग का दावा है कि यह पहला अस्पताल है, जिसके निर्माण के लिए हॉस्पिटल प्लानर नियुक्त किया था। सीएमएचओ डॉ. मनीष शर्मा का कहना है कि पुराने सुल्तानिया की सेवा परंपरा और नए दौर की तकनीक का यह संगम होगा, जिससे राजधानी की स्वास्थ्य व्यवस्था को अगले स्तर पर ले जाने वाला है। अस्पताल का फर्स्ट फेज अगस्त 2026 तक पूरा करने की डेडलाइन रखी है। इसमें अस्पताल में जच्चा-बच्चा से लेकर बुजुर्गों और संक्रामक रोगों के मरीजों को इलाज मिलने लगेगा।

यहां 24-7 इमरजेंसी सेवा मिलेगी। मरीजों को लाने ले जाने के लिए एम्बुलेंस सेवा के साथ मृतकों के लिए शव वाहन मुहैया कराए जाएंगे। अलग से ट्रॉमा केयर यूनिट होगी, जिसमें दुर्घटना की चपेट में आए मरीजों का इलाज किया जाएगा। लेजर मशीनों से लैस एडवांस फिजियोथेरेपी यूनिट बनाई जाएगी।

जनजातीय परिवारों को सशक्त करने बनेगा तीन लाख आदि कर्मयोगियों का समर्पित संवर्ग

41 जिलों के 11294 जनजातीय बहुल गांवों को मिलेगा लाभ

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में जनजातीय परिवारों को सशक्त बनाने और प्रत्येक परिवार को योजनाओं का लाभ देने के लिए तीन लाख आदि कर्मयोगियों का समर्पित संवर्ग तैयार किया जा रहा है। इससे 41 जिलों के 11 हजार 294 जनजातीय बहुल गांवों में रह रहे परिवारों को लाभ होगा।

इसका उद्देश्य जनजातीय कल्याण के लिए उत्तरदायी, पारदर्शी और जवाबदेह शासन को बढ़ावा देना है। यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की सोच है कि विकसित भारत के निर्माण में जनजातीय परिवारों की समान भागीदारी हो। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के निर्देशानुसार आदि कर्मयोगी अभियान में शासकीय अधिकारी 'आदि कर्मयोगी' के रूप में, युवा नेता, शिक्षक, डॉक्टर, सामाजिक कार्यकर्ता एवं जनजातीय कार्यों में रूचि रखने वाले प्रतिबद्ध लोग 'आदि सहयोगी' के रूप में और स्व-सहायता समूह, जनजातीय नेता, स्वयंसेवक, सांस्कृतिक कार्यकर्ता, गांव के निवासी 'आदि साथी' के रूप में जुड़ सकते हैं। धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत आदि कर्मयोगी अभियान में मध्यप्रदेश में विशेषज्ञ संस्था भारत ग्रामीण आजीविका फाउंडेशन - बी.आर.एल.एफ द्वारा आदि कर्मयोगियों को राज्य, जिला, विकासखंड और ग्राम स्तरीय प्रशिक्षण देकर मास्टर ट्रेनर तैयार किये जा रहे हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 02 अक्टूबर 2024 को धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान का शुभारंभ किया था। केन्द्रीय जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा इस अभियान के अंतर्गत प्रधानमंत्री श्री मोदी के मिशन अनुरूप आदि कर्मयोगी अभियान प्रारंभ किया गया है। आदि कर्मयोगी एक राष्ट्रीय मिशन है। इसमें जमीनी स्तर पर शासन-प्रशासन तंत्र तथा सेवाओं को जनजातीय परिवारों के हित में मजबूत बनाया जायेगा। इस अभियान से देश में 20 लाख जिला अधिकारियों एवं अन्य हितधारकों का एक कैडर विकसित हो रहा है। इसमें मध्यप्रदेश के तीन लाख आदि कर्मयोगी शामिल हैं।

आदि कर्मयोगी अभियान में स्वास्थ्य, शिक्षा, महिला एवं बाल विकास, समाज कल्याण, ग्रामीण विकास, वन, पंचायती राज विभाग और जल जीवन मिशन शामिल हैं। यह अभियान केन्द्र से लेकर विकासखंड स्तर तक जनजातीय विकास के संपूर्ण दृष्टिकोण को बढ़ावा देने और सार्वजनिक संस्थानों में विश्वास बढ़ाने का कार्य करेगा। आदि कर्मयोगी अभियान के प्रथम चरण में देश के 27 राज्यों के 326 जिलों को शामिल किया गया है। इसमें मध्यप्रदेश के 41 जिले शामिल हैं।

अभियान अंतर्गत धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए ग्राम स्तर पर अपेक्षित परिणामों में मुख्य रूप से महत्वपूर्ण सेवाओं जैसे - आवास, सड़क, पोषण, शिक्षा, स्वास्थ्य में सौ प्रतिशत लक्ष्य हासिल करना है।

गांव की पगडंडियों पर जो सुकून है, वो शहर की गलियों में कहां

छिंदवाड़ा बना मध्यप्रदेश का नया टूरिज्म हॉट स्पॉट

भोपाल (नप्र)। सतपुड़ा की वादियों में बसे छिंदवाड़ा जिले के पर्यटन-ग्राम अब पर्यटकों के लिये विशेष आकर्षण बन गये हैं। ग्रामीण जीवन, जनजातीय संस्कृति, पहाड़ी ट्रैकिंग और लोक नृत्य सब कुछ एक ही जगह पर्यटकों को मिल रहा है। पिछले 2 वर्षों में यहां बनाये गये होम-स्टे को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की पहचान मिली है। मध्यप्रदेश में होम-स्टे के माध्यम से पर्यटकों को ग्रामीण संस्कृति तथा ग्रामीण जीवन के अनुभव कराने के उद्देश्य से ग्रामीण पर्यटन परियोजना का संचालन किया जा रहा है। इसके तहत प्रदेश के 100 गांवों को पर्यटन ग्राम के रूप में विकसित किया जा रहा है।

होम-स्टे से रूका पलायन- मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड द्वारा विकसित किये गये छिंदवाड़ा जिले के पर्यटन ग्रामों के होम-स्टे देश-प्रदेश के पर्यटकों को खूब भा रहे हैं। हर सप्ताह यहां हजारों की संख्या में सैलानी पहुंच रहे हैं। जिले के 12 गांवों को पर्यटन ग्राम के रूप में चयनित किया गया है। इनमें से 7 गांव सावरवानी, देवगढ़, काजरा, गुमतरा, चोपना, चिमटीपुर और धूसावानी में 36 होम-स्टे पर्यटकों के लिये खोले जा चुके हैं। होम-स्टे खुलने से ग्रामीण रोजगार और उच्च शिक्षा का रूझान बढ़ा है। साथ ही जनजातीय परिवारों का पलायन भी रूक गया है। गांव के युवा गाइड के रूप, लोक नृत्य और भजन मंडली की प्रस्तुति और बैलगाड़ी संचालन से सैलानियों को ग्रामीण जन-जीवन से अवगत कराते हुए अतिरिक्त आय भी अर्जित कर रहे हैं।

हर पर्यटन ग्राम की अपनी पहचान- छिंदवाड़ा जिले के हर पर्यटन ग्राम की अपनी विशेषता है। भोपाल मार्ग पर साल के जंगल के बीच बसे चोपना में देवना नदी का अद्भुत नजारा, पातालकोट के चिमटीपुर गांव की रहस्यमयी वादियां, पेंच नेशनल पार्क के करीब ऑफबीट डेस्टीनेशन गुमतारा, देवगढ़ में गोंड शासन का ऐतिहासिक किला, काजरा में बंधान डेम के बेकवॉटर्स का सौंदर्य और धूसावानी गांव के चौरागढ़ महादेव मंदिर का दृश्य और आम के बागान पर्यटकों को यहां बार-बार आने के लिये प्रेरित करते हैं। होम-स्टे में पर्यटक गाय का दूध दोहने, खेत के कामों में हाथ बटाने और पहाड़ियों पर ट्रैकिंग करने जैसे अनुभव जीते हैं। ढोलक-मंजीरे के साथ भजन और कर्मा नृत्य मंडलियों की प्रस्तुति भी पर्यटकों को आकर्षित कर रही है।

इन्वेस्ट मध्यप्रदेश उद्योग एवं रोज़गार वर्ष 2025

MPSMC

मध्यप्रदेश की खनिज संपदा आत्मनिर्भर भारत की आधारशिला

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश माइनिंग कॉन्क्लेव 2.0

खनन क्षेत्र के भविष्य की नई दिशा - क्रमिक । निरंतर । नीतिगत

मुख्य अतिथि

डॉ. मोहन यादव

मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

23 अगस्त, 2025 । पूर्वाह्न 10:00 बजे
द अरिंदम होटल, कटनी, मध्यप्रदेश

"मध्यप्रदेश खनन और खनिज संसाधनों के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में उभरा है। प्रदेश खनिजों की प्रचुरता और सरकार की निवेश-अनुकूल नीतियों के कारण देश की औद्योगिक प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। खनन क्षेत्र न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करेगा, बल्कि देश के औद्योगिक विकास और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत मिशन में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा। - डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री"

राष्ट्रीय उत्पादन में मध्यप्रदेश का योगदान

हीरा	एकमात्र उत्पादक प्रदेश
तांबा	73%
रॉक फॉस्फेट	29%
मैंगनीज	26%
चूना पत्थर	9%
कोयला	8%

कॉन्क्लेव के फोकस सेक्टर

- **कोयला और ऊर्जा** औद्योगिक विकास व विद्युत उत्पादन का आधार
- **ऊर्जा एवं हाइड्रोकार्बन** आत्मनिर्भर ऊर्जा की दिशा में महत्वपूर्ण संसाधन
- **प्रौद्योगिकीय प्रगति** डिजिटल, स्मार्ट और आधुनिक खनन समाधान
- **क्रिटिकल मिनरल्स** भविष्य की अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक आधार
- **चूना पत्थर और सीमेंट** निर्माण और अधोसंरचना विकास की रीढ़
- **खनिज एवं खनिज उत्पाद** आधुनिक खनन तकनीकों और खनन क्षेत्र में डिजिटलीकरण पर विशेष प्रदर्शनी

आइए, मध्यप्रदेश माइनिंग कॉन्क्लेव 2025 का हिस्सा बनें और भविष्य के अवसरों से जुड़ें

D-11087/25

सीधा प्रसारण @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP jansamparkMP

IN PARTNERSHIP WITH Deloitte. CII Confederation of Indian Industry